वैदिक सूक्तियाँ

[अथर्ववेद की एक सहस्र सूक्तियों का अनुपम संग्रह]

लेखक
रामनाथ वेदालङ्कार



प्रकाशन मन्दिर, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

'वैदिक सूक्तियाँ' नाम की आपकी हस्त-
लिखित पुस्तक मैंने देखी। यह पुस्तक क्या
है, अथर्ववेद के सागर से चुन कर लाये हुए
मोतियों की माला है। इसे पढ़ कर मेरा हृदय
गद्गद हो गया। जिस विषय की सूक्तियाँ
पढ़ने लगते हैं उसी में हृदय बह जाता है।
अनुवाद की भाषा भी बहुत सुन्दर बनी है।
... हैं आर्य जनता इससे पर्याप्त लाभ
...नेक सूक्तियाँ प्रत्येक व्यक्ति के सदा
... हैं। मेरी तो हार्दिक इच्छा
...ों वेदों की सूक्तियाँ
...र्मी

स्वाध्याय मञ्जरी का उन्नीसवाँ पुष्प

वैदिक सूक्तियाँ

[अथर्ववेद की एक सहस्र सूक्तियों का अनुपम संग्रह]

पं० रामनाथ वेदालङ्कार
उपाध्याय वैदिक साहित्य, गुरुकुल विश्वविद्यालय
कांगड़ी, हरिद्वार।



श्रद्धानन्द-स्मारक-निधि के सभासदों की सेवा में
गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी की ओर से
संवत् २००७ की भेंट





मूल्य १।।।)

प्रकाशक,
प्रकाशन मन्दिर
गुरुकुल कांगड़ी
(सहारनपुर)

प्रथम बार २०००
संवत् २००६

मुद्रक,
पं० हरिवंश वेदालङ्कार,
गुरुकुल मुद्रणालय,
गुरुकुल कांगड़ी ।

विषय-सूची

चतुर्थ अध्याय (उन्नति के पथ पर)

पञ्चम अध्याय (शरीर रक्षा)

षष्ठ अध्याय (विविध विषयों पर)

प्रारम्भिक शब्द

वेद ज्ञान के अमृत-रस की एक दिव्य धारा है। कर्तव्य-पथ पर चलने के लिये जीवन में जिन उपदेश और प्रेरणा के प्रवाहों की आवश्यकता है वे सब इस में प्रवाहित हो रहे हैं। उनमें स्नान करके मानव-जीवन एक नवीन चेतना, जागृति और स्फुरणा को अनुभव कर सकता है।

वेद का अध्ययन करते हुए मेरा ध्यान वेदों में विद्यमान छोटी-छोटी सूक्तियों की ओर गया। ये सूक्तियाँ क्या हैं, एक-एक सूक्ति एक-एक अनुपम रत्न है, दिव्य सौरभ से महकता हुआ एक-एक पुष्प है, एक-एक अमृत-बिन्दु है। इन सूक्तियों से सुशोभित होकर मानव-जीवन का बहुमूल्य मणि-मुकुट एक अलौकिक ज्योति से प्रस्फुरित हो सकता है, इन सूक्ति-पुष्पों के सौरभ से मनुष्य का अन्तःकरण सुरभित बन सकता है, इन अमृत-बिन्दुओं का पान करके मनुष्य अमरता का आनन्द पा सकता है। ये सूक्तियाँ अमर काव्य के अमर गान हैं।

किसी भी साहित्य में सूक्तियाँ बड़े महत्त्व की वस्तु होती हैं। भिन्न २ भाषाओं की सूक्तियाँ उन भाषाओं के बोलने वालों के जिह्वाग्र पर रहती हैं, और अपनी बातचीत में, उपदेशों-व्याख्यानों में अनेक प्रसंगों पर लोग उनका व्यवहार करते हैं। संस्कृत में बाल्मीकि, कालिदास आदि तथा हिन्दी में सूर, तुलसी, कबीर आदि कवियों की अनेक

सूक्तियाँ ऐसी ही हैं। मैने देखा कि वेदों में भी विविध विषयों पर बड़ी ही रोचक, शिक्षाप्रद, नित्यप्रति दैनिक व्यवहार में काम आने वाली अनेक सुन्दर सूक्तियाँ मिलती हैं। किन्तु उनका इतना प्रचार न होने से उन्होंने अब तक अपना उपयुक्त स्थान नहीं पाया है।

जब मैं वेदों की इन सूक्तियों के प्रति आकृष्ट हुआ तो विचार आया कि ये सब सूक्तियाँ संगृहीत होकर जनता के सामने आ जायें तो कितना अच्छा हो। सर्व प्रथम मैंने अथर्ववेद की सूक्तियों का संग्रह प्रारम्भ किया। अथर्ववेद में २० काण्ड हैं और उनमें कुल ५६८७ मन्त्र हैं। इनमें से चयन की हुई ये एक सहस्र सूक्तियाँ इस पुस्तक द्वारा पाठकों के सम्मुख उपस्थित हैं। अनेक सूक्तियाँ हृदयग्राही होने पर भी लम्बी होने के कारण छोड़नी पड़ी हैं। दो चरणों से अधिक लम्बी कोई सूक्ति इस संग्रह में नहीं ली गई। दो चरणों वाली सूक्तियां भी अधिक नही हैं। अधिकांश सूक्तियाँ एक चरण की हैं। कुछ एक चरण से भी छोटी हैं। एक ही से आशय की जहाँ कई सूक्तियाँ मिलीं उनमें से उन्हीं को चुन लिया गया है जो अधिक रोचक, भावाभिव्यञ्जक और पाठ में सुविधाजनक हैं।

एक यह प्रश्न था कि सूक्तियाँ किस क्रम से दी जायें। वेद में एक विषय की सब सूक्तियाँ एक ही स्थान पर हों ऐसा नहीं है। वेद का अपना दूसरा ही क्रम है। परन्तु यहाँ पाठकों की सुविधा के लिये तथा अन्य कई दृष्टियों से यही उपयुक्त समझा गया कि सूक्तियाँ विषय वार दी जायें। विषय की दृष्टि से इन्हें ६ अध्यायों में बांट दिया है।

प्रथम अध्याय प्रभु को अर्पित किया गया है। सर्वप्रथम प्रभु-चरणों में नमस्कार के पुष्प चढ़ा कर प्रभु का पूजन तथा स्तवन किया

गया है। अगला प्रकरण परमेश्वर के एकत्व का प्रतिपादन करने वाला है। इस प्रकरण की सूक्तियों में बड़ी स्पष्टता और तीव्रता के साथ यह घोषणा की गई है कि परमेश्वर एक ही है। कई आलोचक वेदों पर आक्षेप करते हैं कि वेद नाना देवी-देवों की पूजा सिखाते हैं। इस प्रकरण से स्पष्ट है कि उनका यह आरोप बिल्कुल मिथ्या है। अग्नि, इन्द्र, वरुण आदि सब एक ही परमेश्वर के भिन्न २ गुणों को सूचित करने वाले भिन्न २ नाम हैं, न कि अनेक परमेश्वरों को सूचित करते हैं। इसी अध्याय में जो प्रभु-महिमा का गान किया गया है वह भी दर्शनीय है। अन्त में भक्त अपने प्रभु से ऐहलौकिक और पारलौकिक सुखों के लिये जो प्रार्थनायें करता है वे दी गई हैं।

द्वितीय अध्याय में 'गुणों की पुकार' है। ब्रह्मचर्य, श्रद्धा, तेजस्विता, सत्य, पवित्रता, निर्भयता, मधुरता आदि अनेक गुणों के लिये इसमें कैसी तीव्रता के साथ प्रेरणा और कामना की गई है पाठक इसका अनुभव करें। इन सूक्तियों से मनुष्य को प्रेरणा मिलती है कि वह सत्य आदि गुणों को ग्रहण करता हुआ जीवन में तेजस्वी, यशस्वी बन कर रहे। यहां निर्भयता और सुख शान्ति का जो आह्वान है वह भी देखने योग्य है अन्त में अमरता की अभीप्सा की गई है। पाठक देखें कि इन सब गुणों की प्राप्ति के लिये वेद हमारे अन्दर कैसी उत्कट भावना भरना चाहता है।

तृतीय अध्याय में गृहस्थ-जीवन सम्बन्धी सूक्तियों का संग्रह है। तो भी इसमें अनेक सूक्तियाँ ऐसी हैं जो केवल गृहस्थी के लिये ही नहीं हैं, किन्तु प्रत्येक के काम की हैं। गृहस्थाश्रम में पति-पत्नी के क्या कर्तव्य हैं, आदर्श नारी को कैसा होना चाहिये, किस प्रकार घर में सब पार-

वारिक जनों को प्रीति-पूर्वक रहना चाहिये, घर कैसे सुखसमृद्धिमय होने चाहियें, किस प्रकार गृहस्थी को दान, अतिथि-सत्कार आदि कर्तव्यों का पालन करना चाहिये, ये सब विषय इस अध्याय की सूक्तियों में कहे गये हैं।

चतुर्थ अध्याय 'उन्नति के पथ पर' अग्रसर करने वाला है। इस अध्याय में प्रारम्भ में ही 'उद्‌बोधन' शीर्षक के नीचे कुछ सूक्तियाँ हैं जो मनुष्य को जागृत करके आगे बढ़ने की प्रेरणा देने वाली हैं। 'राक्षस-संहार' प्रकरण ऐसा है कि उसे पढ़ कर मन राक्षसों के विध्वंस के लिये उत्साह से परिपूरित हो उठता है। मनुष्य में आत्म-विश्वास कैसा प्रबल होना चाहिये यह भी पाठक इस अध्याय में देखेंगे। एक प्रकरण मनुष्य की महत्त्वाकांक्षाओं का है। अन्त में मनुष्य की उन्नति के लिये शुभ-कामनाएँ व्यक्त की गई हैं।

पञ्चम अध्याय 'शरीर-रक्षा' पर है। शरीर का अंग-अंग किस प्रकार शक्ति की तरंगों से तरंगित रहना चाहिये, किस प्रकार मनुष्य को नीरोग रहते हुए सौ और सौ से भी अधिक वर्षों तक सुख पूर्वक जीना चाहिये, इस विषय की अतीव प्रेरणाप्रद सूक्तियाँ इस अध्याय में दी गई हैं। रोगी को आश्वासन देने वाली सूक्तियाँ भी इस अध्याय का भूषण हैं।

षष्ठ अध्याय में विविध विषयों पर सूक्तियाँ हैं। सर्व प्रथम मातृ-भूमि के प्रति उद्‌गार प्रकट किये गये हैं। भूमि हमारी माता है, हम उसके पुत्र हैं। हमारी राष्ट्र-भूमि हमें सुखी-समृद्ध रखे, धन-धान्य, मणि-मुक्ता, हिरण्यादि से हमें सिंचित करती रहे और हम भी राष्ट्र के सच्चे सेवक हों। ये विचार इन सूक्तियों में प्रकट किये गये हैं। इसके बाद

राजा को उसके कर्तव्यों का स्मरण कराया गया है। वही राष्ट्र उन्नति कर सकता है जिसमें क्षात्रबल और ब्राह्मबल दोनों का समन्वय रहता है। जो राजा ब्राह्मणवाणी की अनसुनी करके स्वेच्छाचारी हो जाता है वह कभी राष्ट्र में सुख-शान्ति नहीं ला सकता। ब्राह्मण-घाती राजा का राज्य दुर्गतियों से ग्रस्त हो जाता है। इस विषय की सूक्तियाँ भी इस अध्याय में हैं। वृष्टि की जो सूक्तियाँ हैं उन्हें पढ़ते हुए वर्षा काल की छटा आँखों के सामने चित्रित हो जाती है। गो-पालन की सूक्तियों का महत्त्व स्वतः स्पष्ट है। वेद की दृष्टि में गौ हमारी माता है, गौ का दूध हमारे लिये अमृतोपम है। जीवात्मा-विषयक सूक्तियों का जो प्रकरण है उससे सिद्ध होता है कि आत्मा अमर है, और वह कर्मानुसार भिन्न २ योनियों में जन्म लेता है। अन्त में विविध शीर्षक के नीचे कुछ बिखरी हुई सूक्तियाँ दी गई हैं।

यह इस पुस्तक के अध्यायों का संक्षिप्त सा परिचय है। पर वस्तुतः सूक्तियों में जो सौष्ठव है वह इससे कुछ भी प्रकट नहीं हो पाया है। वह तो तभी प्रकट होगा जब पाठक स्वयं उन सूक्तियों का रसास्वादन करेंगे। जो पाठक संस्कृत से अनभिज्ञ हों और वेद के शब्दों का सीधा आनन्द न ले सकते हों वे विषय वार सूक्तियों का केवल हिन्दी-अनुवाद भी पढ़ते चलेंगे तो भी वैदिक भावना को ग्रहण कर सकेंगे और सूक्तियों का रस ले सकेंगे।

मैंने प्रयत्न किया है कि सूक्तियों का अनुवाद ललित और सुन्दर रहे। जहाँ तक हो सका है अनुवाद को मूल शब्दों से अधिक दूर नहीं जाने दिया है। तो भी मूल में जो भाव, बल, स्पन्दन, आवेश आदि है वह अनुवाद में बिल्कुल वैसा आ सके इसके लिये अनुवाद में कुछ स्वतन्त्रता की अपेक्षा होती ही है।

जिन्हें वेद के स्वाध्याय में रुचि हो और यह देखने की अभिलाषा हो कि अथर्ववेद में अमुक सूक्ति किस स्थल पर किस प्रकरण में आई है, उनके लिये प्रत्येक सूक्ति के अन्त में उसका पता भी दे दिया है। पता तीन अंकों में दिया गया है। पहला अंक काण्ड का सूचक है, दूसरा अंक सूक्त का और तीसरा अंक मन्त्र का। जैसे १०. ८. १ का अभिप्राय होगा कि अमुक सूक्त दशम काण्ड में आठवें सूक्त के पहले मन्त्र की है। जहाँ एक ही पते की दो या अधिक सूक्तियाँ एक साथ आ गई हैं वहाँ उनमें से प्रत्येक सूक्ति के आगे पता न देकर उस पते की पहली सूक्ति पर ही पता दिया है। अतः जिन सूक्तियों के आगे कुछ नहीं लिखा गया उनका पता वही समझना चाहिये जो उस उपरली सूक्ति का है जिसके आगे पता दिया हुआ है।

इस संग्रह में केवल अथर्ववेद की सूक्तियाँ हैं। यदि पाठकों ने रुचि दिखाई तो अगले संस्करण में अन्य वेदों की सूक्तियाँ भी इसमें सम्मिलित की जा सकती हैं।

अन्त में, आशा है कि ये सूक्तियाँ पाठकों को ज्योति देने वाली होंगी, जो जीवन में हताश हो बैठे हैं उन्हें उत्साहित करने वाली होंगी, जो सांसारिक आघातों से पीड़ित होकर दुःखभाजन बने हुए हैं उनके व्यथित हृदय को शान्ति देने वाली होंगी, जो सो रहे हैं उन्हें जाग्रत करने वाली होंगी। इस आशा के साथ प्रभु का यह काव्य पाठकों के कर कमलों में समर्पित है।

गुरुकुल विश्वविद्यालय
कार्तिक-पूर्णिमा, २००६

वेद-प्रेमियों का सेवक
रामनाथ वेदालङ्कार

प्रथम अध्याय

प्रभु-चरणों में

:
:
!
ि
ई
र
र
ि

रु
स

हों
जो
व्य
कर
क:

गु
का

नमस्कार

तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः १०.८.१

ज्येष्ठ ब्रह्म के चरणों में हमारा नमस्कार।

नमस्ते रुद्र कृण्मः सहस्राक्षायामर्त्य ११.२.३

हे अमर प्रभो ! तुझ सहस्र-नेत्र को नमस्कार।

पुरस्तात् ते नमः कृण्म उत्तरादधरादुत ११.२.४

प्रभो ! पूर्व में तुझे नमस्कार, उत्तर में नमस्कार, दक्षिण में नमस्कार।

चतुर्नमो अष्टकृत्वो भवाय दशकृत्वः पशुपते नमस्ते ११.२.६

हे प्रभो ! तुझे चार वार नमस्कार, आठ वार नमस्कार, दस वार नमस्कार।

नमः सायं नमः प्रातर्नमो रात्र्या नमो दिवा ११.२.१६

प्रभु को सायं नमस्कार, प्रातः नमस्कार, रात्रि में नमस्कार, दिन में नमस्कार।

नमस्ते अस्तु पश्यत १३.४.४८

हे द्रष्टा ! तुझे नमस्कार।

विराजे नमः स्वराजे नमः सम्राजे नमः १७.१.२२

विराट् प्रभु को नमस्कार, स्वराट् प्रभु को नमस्कार, सम्राट् प्रभु को नमस्कार।

 

पूजन

देवं त्वष्टारमिह यक्षि विद्वान् ५.१२.६

हे मनुष्य ! विद्वान् बन और जगत्स्रष्टा की पूजा कर।

स्तुहि देवं सवितारम् ६.१.१

सविता प्रभु की स्तुति कर।

श्रदस्मै धत्त २०.३४.५

भाइयो ! परमेश्वर में श्रद्धा करो।

इन्द्रं स्तोता नव्यं गीर्भिः २०.४४.१

वाणी से स्तवनीय प्रभु का गुणगान करो।

इन्द्राय साम गायत २०.६२.५

प्रभु के गीत गाओ।

आ त्वेता निषीदत-इन्द्रमभि प्रगायत २०.६८.११

आओ, बैठो, प्रभु के गुण गाओ ।

अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत २०.९२.५

अर्चना करो, अर्चना करो, हे बुद्धिमानो ! प्रभु की अर्चना करो ।

अर्चन्तु पुत्रका उत

तुम्हारे पुत्र प्रभु की अर्चना करने वाले हों ।

ब्रह्मेन्द्राय वोचत २०.११९.१

प्रभु का स्तुतिगान करो ।

 

स्तवन

समेत विश्वे वचसा पतिं दिवः ७.२१.१

आओ, सब मिल कर दिवस्पति परमेश्वर का स्तवन करें ।

विष्णो र्नु कं प्रावोचं वीर्याणि ७.२६.१

मैं उस 'सर्व-व्यापी' की वीरताओं का गान करता हूँ ।

हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रम् ७.८६.१

मैं सर्वशक्तिमान् बहुस्तुत प्रभु का आह्वान करता हूँ।

ब्रह्माहमन्तरं कृण्वे ७.१००.१

ब्रह्म को मैं अपने अन्दर बैठा लेता हूँ।

नेत् त्वा जहानि १३.१.१२

प्रभो ! मैं तुझे कभी न छोड़ूँ।

विभूः प्रभुरिति त्वोपास्महे वयम् १३.४.४७

हे परमेश्वर ! 'विभु', 'प्रभु' नामों से हम तेरी उपासना करते हैं।

स्तोमैर्विधेमाग्नये २०.१.३

आओ, स्तुतिगीतों से प्रभु की पूजा करें।

शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रम् २०.११.११

आओ, सुखदायक, धनपति प्रभु को पुकारें।

तव स्मसि २०.१५.५

प्रभो ! हम तेरे हैं।

न घा त्वद्रिगपवेति मे मनः २०.१७.२

मेरा मन तो तुझ में लगा है, तुझ से हटता ही नहीं।

त्वे इत् कामं पुरुहूत शिश्रय

प्रभो ! मैंने अपनी चाह को तुझ में ही केन्द्रित कर दिया है।

राजेव दस्म निषदोऽधि बर्हिषि

हे दर्शनीय ! राजा बन कर मेरे हृदयासन पर बैठो।

वयमिन्द्र त्वायवोऽभि प्रणोनुमो वृषन् २०.१८.४

हे सुखवर्षी ! हमें तेरी चाह है, तुझे बार-बार प्रणाम !

नामानि ते शतक्रतो विश्वाभिर्गीर्भिरीमहे २०.१९.३

प्रभो ! समस्त वाणियों से हम तेरा नाम-कीर्तन करते हैं।

त्वामीमहे शतक्रतो २०.१९.६

हे भगवन् ! हम तेरे आगे हाथ पसारते हैं।

स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि २०.६८.६

हम प्रभु की ही शरण पकड़ें।

तं त्वा परिष्वजामहे २०.९५.३

हे प्रभो ! हम तुझ से लिपट पड़ते हैं।

हवामहे त्वोपगन्तवा उ २०.९६.५

प्रभो ! हम तेरे समीप पहुँचने के लिये पुकार मचा रहे हैं ।

 

वह एक है

एक एव नमस्यः २.२.१

याद रखो, एक ही परमेश्वर है जो नमस्करणीय है ।

एको राजा जगतो बभूव ४.२.२

जगत् का राजा एक ही है ।

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुः ९.१०.२८

परमेश्वर को ही इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि कहते हैं ।

एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति

एक ही परमेश्वर को विप्रजन अनेक नामों से पुकारते हैं ।

स धाता स विधर्ता स वायुः १३.४.३

परमेश्वर 'धाता' है, 'विधर्ता' है, 'वायु' है ।

सोऽर्यमा स वरुणः स रुद्रः स महादेवः १३.४.४

परमेश्वर ही 'अर्यमा', 'वरुण', 'रुद्र' और 'महादेव' है।

सो अग्निः स उ सूर्यः स उ एव महायमः १३.४.५

परमेश्वर 'अग्नि' है, 'सूर्य' है, वही 'महायम' है।

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते १३.४.१६

परमेश्वर न दो हैं, न तीन हैं, न चार हैं।

न पञ्चमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते १३.४.१७

परमेश्वर न पांच हैं, न छः हैं, न सात हैं।

नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते १३.४.१८

परमेश्वर न आठ हैं, न नौ हैं, न दस हैं।

स एष एक एकवृदेक एव १३.४.२०

परमेश्वर एक है, एक है, सच मानो एक ही है।

सर्वे अस्मिन् देवा एकवृतो भवन्ति १३.४.२१

सब देवता इसी एक देवाधिदेव के नीचे हैं।

द्यावाभूमी जनयन् देव एकः १३.२.२६

आकाश-भूमि को पैदा करने वाला वह देव एक ही है।

 

महिमा-गान

त्वं हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसि ४.३३.६

हे सर्वतोमुख ! तू घट घट में व्यापक है ।

त्वं ता विश्वा भुवनानि वेत्थ ५.११.४

तू सब भुवनों के कोने २ से परिचित है ।

सखा नो असि परमं च बन्धुः ५.११.११

तू हमारा सखा और परम बन्धु है ।

सद्यः सर्वान् परिपश्यसि ११.२.२५

तुरन्त तू सबको देख लेता है ।

त्वं वरुण पश्यसि १३.२.२१

हे प्रभो ! तू सर्वदर्शी है ।

महाँस्ते महतो महिमा १३.२.२६

तुझ महान् की महिमा महान् है ।

त्वमादित्य महाँ असि

हे अमर प्रभो ! तू महान् है ।

तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि १७.१.६

प्रभो ! तेरे अनेक वीरता के कार्य हैं ।

त्वमिन्द्रासि विश्वजित् सर्ववित् १७.१.११

प्रभो ! तू विश्वजित है, सर्ववित् है ।

त्वं ततं त्व पर्यष्युत्सम् १७.१.१५

तू विस्तीर्ण गगन में व्यापक है, तू झरनों में व्यापक है ।

त्व रक्षसे प्रदिशश्चतस्रः १७.१.१६

तू चारों दिशाओं का रक्षक है ।

त्वमिन्द्रस्त्व महेन्द्रः १७.१.१८

तू इन्द्र है, तू महेन्द्र है ।

शुक्रोऽसि भ्राजोऽसि १७.१.२०

तू शुद्ध है, तू भ्राजमान है ।

रुचिरसि रोचोऽसि १७.१.२१

तू रोचिष्णु है, तू रोचमान है ।

मघैर्मघोनो अति शूर दाशसि १८.१.३८

हे दानशूर ! तू सब धनियों से अधिक धनी और दानी है ।

धर्तासि धरुणोऽसि १८.३.३६

तू जगदाधार है, तू जगत का आधार-स्तम्भ है।

भूरि त इन्द्र वीर्यम् २०.१५.५

प्रभो ! तेरे अन्दर अपार बल है।

विश्वमाभासि रोचन २०.४७.१६

हे चमकाने वाले ! तू ही विश्व को चमका रहा है।

महस्ते सतो महिमा पनस्यते २०.५८.३

तुझ महान् की महिमा का सर्वत्र गान हो रहा है।

अद्धा देव महाँ असि

सचमुच, हे देव ! तू बड़ा महान् है।

त्वं सूर्यमरोचयः २०.६२.६

तूने सूर्य चमकाया है।

विश्वकर्मा विश्वदेवो महाँ असि

तू विश्वकर्मा है, विश्वदेव है, महान् है।

त्वं नृभिर्हव्यो विश्वधाऽसि २०.७३.१

तू मनुष्यों का पूज्य है, तू विश्व का आधार है।

त्वं राजा जनानाम् २०.६३.३

तू जनों का राजा है।

त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः २०.६३.५

प्रभो! तू बल, साहस और ओजस्विता में सर्वोपरि है।

त्वमिन्द्रासि वृत्रहा २०.६३.६

प्रभो! तू पापनाशक है।

असि सत्य ईशानकृत् २०.१०४.४

हे ईश! तू सच्चा है।

तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं पृथिवी वर्धति श्रवः २०.१०६.२

भूमि-आकाश तेरे पौरुष और यश का गान कर रहे हैं।

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ २०.१०८.२

प्रभो! तू ही हमारा पिता है, तू ही माता है।

उत्सो देव हिरण्ययः २०.११८.२

हे देव! तू सम्पत्ति का झरना है।

न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते २०.१२१.२

भूमि-आकाश कहीं भी तुझ सा न कोई पैदा हुआ है, न होगा।

 

न यस्य हन्यते सखा न जीयते कदाचन १.२०.४

प्रभु के मित्र को कोई मार या जीत नहीं सकता।

स नः पिता जनिता स उत बन्धुः २.१ ३

वह हमारा पिता है, जनयिता है, बन्धु है।

स दाधार पृथिवीमुत द्याम् ४.२.७

वह भूमि-आकाश को धारे हुए है।

बृहन्नेषामधिष्ठाता ४.१६.१

सबका अधिष्ठाता प्रभु बड़ा ही महान् है।

द्वौ सन्निषद्य यन्मन्त्रयेते राजा तद् वेद वरुण-स्तृतीयः ४.१६.२

कोई दो बैठ कर जो मन्त्रणा करते हैं प्रभु तीसरा होकर उसे जान लेता है।

दिवः स्पशः प्रचरन्तीदमस्य ४.१६.४

प्रभु के गुप्तचर सर्वत्र विचर रहे हैं।

उतेयं भूमिर्वरुणस्य राज्ञः ४.१६.३

यह सारी भूमि प्रभु राजा की ही है।

उतास्मिन्नल्प उदके निलीनः

प्रभु इस छोटी सी पानी की बूँद में भी छिपा बैठा है।

भीमा इन्द्रस्य हेतयः ४.३७.८

प्रभु के दण्ड बड़े भयङ्कर हैं।

तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठम् ५.२.१

प्रभु संसार में सबसे बड़ा है।

तस्य स्पशो न निमिषन्ति ५.६.३

प्रभु के गुप्तचर कभी आंख बन्द नहीं करते।

सम्राडेको विराजति ६.३६.३

प्रभु जगत् का अद्वितीय सम्राट् है।

धाता दाधार पृथिवीं धाता द्यामुत सूर्यम् ६.६०.३

प्रभु भूमि को थामे है, प्रभु आकाश और सूर्य को थामे है।

पूषेमा आशा अनुवेद सर्वाः ७.६.२

प्रभु दिशाओं के कोने २ से परिचित है।

यत्र सोमः सदमित् तत्र भद्रम् ७.१८.२

जहां प्रभु है वहां कल्याण ही कल्याण ।

प्रजापति जनयति प्रजा इमाः ७.१६.१

प्रभु ही सब प्रजाओं का जन्मदाता है।

विष्णोः कर्माणि पश्यत ७.२६.६

देखो, प्रभु के आश्चर्य-जनक कर्मों को देखो।

न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति ८.४.१३

प्रभु पापी को कभी नहीं बढ़ाते।

हन्ति रक्षो हन्त्यासद् वदन्तम्

राक्षस को और असत्यवादी को प्रभु दण्ड देते हैं।

ब्रह्मणा भूमिर्विहिता १०.२.२५

प्रभु ने यह भूमि रची है।

सर्वा दिशः पुरुष आबभूव १०.२.२८

प्रभु सब दिशाओं में व्यापक है।

व्यावृत्तः स पाप्मना १०.७.४०

प्रभु पाप से पृथक् है।

अकामो धीरो अमृतः स्वयभूः १०.८.४४

प्रभु अकाम है, धीर है, अमर है, स्वयंभू है।

रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः

प्रभु रसतृप्त है, कहीं से भी न्यून नहीं है।

तमेव विद्वान् न विभाय मृत्योः

प्रभु के दर्शन कर मनुष्य मृत्युभय से छूट जाता है।

तदु नात्येति किंचन १०.८.१६

प्रभु से बढ़ कर कोई वस्तु नहीं।

सनातनमेनमाहुरुताद्य स्यात् पुनर्णवः १०.८.२३

प्रभु सबसे पुरातन है, पर आज भी वह नया है।

भवो दिवो भव ईशे पृथिव्याः ११.२.२७

प्रभु भूमि-आकाश सब का ईश्वर है।

पिता देवानां जनिता मतीनाम् १३.३.१६

प्रभु देवों का पिता है, बुद्धि का उत्पादक है।

स सर्वस्मै विपश्यति यच्च प्राणति यच्च न १३.४.१६

वह जड़-चेतन सबको देख रहा है।

तस्यामू सर्वा नक्षत्रा वशे चन्द्रमसा सह १३.४.२८

चांद-तारे सब उसी प्रभु के वश में हैं।

नकिरस्य प्रमिनन्ति व्रतानि १८.१.५

प्रभु के नियमों को कोई नहीं तोड़ सकता।

ततः परं नाति पश्यामि किंचन १८.२.३२

प्रभु से बढ़ कर मुझे कुछ नहीं दीखता।

इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनाम् १९.५.१

प्रभु सब जगत् का, सब मनुष्यों का राजा है।

इन्द्रस्त्रातोत वृत्रहा १९.१५.३

प्रभु रक्षक है, किन्तु दुष्टों का हन्ता है।

इन्द्रो वृत्राणि जिघ्नते २०.५.२

प्रभु दुराचारियों को दण्ड देता है।

इन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि २०.११.६

प्रभु के सब कर्म शोभा के साथ होते हैं।

हत्वी दस्यून् प्रार्यं वर्णमावत् २०.११.६

प्रभु दुष्टों का विनाश कर आर्यजनों की रक्षा करता है।

मघवा वस्व ईशते २०.१७.३

प्रभु सब धनों का स्वामी है।

विशं विशं मघवा पर्यशायत २०.१७.६

प्रत्येक मनुष्य के अन्दर प्रभु निवास कर रहा है।

द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते २०.३४.१४

भूमि-आकाश प्रभु के चरणों में झुका हुआ है।

शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते

प्रभु के बल से पहाड़ तक थर्राते हैं।

द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः २०.४७.२

प्रभु तेजस्वी है, यशस्वी है, सौम्य है।

सो अस्य महिमा न संनशे २०.४६.७

प्रभु की महिमा का कोई पार नहीं पा सकता।

भद्रा इन्द्रस्य रातयः २०.५८.२

प्रभु के दान बड़े ही श्रेष्ठ हैं।

न विन्धे अस्य सुष्टुतिम् २०.७०.१३

प्रभु की स्तुति का मैं पार नहीं पा सकता।

महाँ इन्द्रः परश्च नु २०.७१.१

प्रभु महान् है, सर्वोत्कृष्ट है।

इन्द्रः सूर्यमरोचयत् २०.११८.४

प्रभु ने सूर्य चमकाया है।

विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः २०.१२६.१

प्रभु सबसे बड़ा है।

व्याप पूरुषः २०.१३१.१७

प्रभु सर्वव्यापक है।

 

प्रार्थनायें

मृडया नस्तनूभ्यो मयस्तोकेभ्यस्कृधि १.२६.४

प्रभो हमारे शरीर को सुख दे, सन्तानों को सुख दे।

विश्वम्भर विश्वेन मा भरसा पाहि २.१६.५

हे विश्वम्भर ! अपनी विश्वभरणशक्ति से मेरी रक्षा करो।

प्रत्यङ् नः सुमना भव ३.२०.२

हे प्रभो ! हम पर कृपालु मन वाला हो।

द्विषो नो विश्वतोमुख-अति नावेव पारय ४.३३.७

हे विश्वतोमुख ! नैया बन कर तू हमें शत्रुओं से पार कर।

देव त्वष्टर्वर्धय सर्वतातये ६.३.२

प्रभो ! हमें इतना समृद्ध कर कि सब कुछ पा लें।

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु ७.८०.३

हे प्रभो ! जिस शुभ इच्छा स हम तेरा आह्वान करें वह हमारी पूर्ण हो।

अस्मत् पाशान् वरुण मुञ्च सर्वान् ७.८३.४

प्रभो ! हमारे सब पाप-पाशों को काट दे।

भव राजन् यजमानाय मृड ११.२.२८

हे मेरे प्रभु राजा ! मुझ पुजारी को सुखी कर।

मा नो हिंसीः पितरं मातरं च ११.२.२६

हे प्रभो ! हमारे पिता-माता को कष्ट मत दे ।

गोष्ठे नो गा जनय योनिषु प्रजाः १३.१.१६

हमारी गोशाला में गौएँ दे, घरों में सन्तान दे ।

सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् १७.१.७

हे प्रभो ! मुझे सुधा-रस पिला, परम पद दिला ।

श्रधी नो अग्ने १८.१.२५

प्रभो ! हमारी प्रार्थना को सुन ।

इन्द्र क्रतुं न आभर १८.३.६७

हे प्रभो ! हमें कर्म से अनुप्राणित कर ।

वि द्विषो वि मृधो जहि १९.१५.१

हमारी द्वेषवृत्तियों और हिंसावृत्तियों को नष्ट कर ।

वृत्राणि वृत्रहं जहि २०.५.३

हे पापहन्ता ! हमारे पापों को नष्ट कर ।

अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव २०.१३.३

प्रभो ! तेरी मैत्री पाकर हम विनाश से बच जायें ।

अस्य स्तोतुर्मघवन् काममापृण २०.१५.५

हे मघवन् ! मुझ स्तोता का मनोरथ पूर्ण कर।

मा त्वायतो जरितुः काममूनयीः २०.२१.३

प्रभो ! तेरी चाह वाले मुझ भक्त के मनोरथ को अपूर्ण मत रख।

न स्तोतारं निदे करः २०.२३.६

मुझ स्तोता को निन्दा का पात्र मत कर।

वयं त इन्द्र विश्वह प्रियासः २०.३४.१८

प्रभो ! हम सदा तेरे प्यारे बने रहें।

भिन्धि विश्वा अप द्विषः २०.४३.१

हमारी सब द्वेष-वृत्तियों को छिन्नभिन्न कर दे।

वसु स्पार्हं तदाभर

वह अलौकिक स्पृहणीय ऐश्वर्य प्रदान कर।

मा नो अतिख्य आगहि २०.५७.३

हमें अपने दर्शनों से वञ्चित मत रख।

कदा नः शुश्रवद् गिर इन्द्रो अङ्ग २०.६३.५

हे मेरे प्यारे प्रभु ! कब तू मेरी पुकार को सुनेगा ?

अप्नस्वती मम धीरस्तु शक्र २०.८९.३

हे प्रभो ! मेरी बुद्धि कर्म से युक्त हो ।

त्वं न इन्द्राभर ओजो नृम्णं शतक्रतो २०.१०८.१

हे वीर ! हमें ओज और पौरुष प्रदान कर ।

स नो रास्व सुवीर्यम् २०.१०८.३

हमें वीरता प्रदान कर ।

यद् यद् यामि तदाभर २०.११८.२

जो जो मैं मांगू वह मुझे दे ।

स घा नो देवः सविता साविषदमृतानि भूरि ६.१.३

प्रभु सदा हम पर अमृत-वर्षा करते रहें ।

स नः पर्षदति द्विषः ६.३४.१

प्रभु हमें बुराइयों से पार करे ।

स वृषा वृषभो भुवत् २०.४७.१

प्रभु बादल बन कर हम पर सुखवर्षा करे ।

नृतौ स्याम नृतमस्य नृणाम् २०.७६.२

सब से बड़े नायक प्रभु का नेतृत्व हमें प्राप्त हो ।



द्वितीय अध्याय

गुणों की पुकार

ब्रह्मचर्य

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति ११.५.१७

ब्रह्मचर्य के तेज से राजा राष्ट्र की रक्षा करता है।

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम् ११.५.१८

ब्रह्मचर्य से ही कन्या युवा पति को पाती है।

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत ११.५.१९

ब्रह्मचर्य के तेज से देवों ने मृत्यु को जीता है।

 

बुद्धि

त्वं नो मेधे प्रथमा ६.१०८.१

हे बुद्धि ! तू हमारे लिये सर्वश्रेष्ठ वस्तु है।

ऋषयो भद्रां मेधां यां विदुस्तां मय्यावेशयामसि ६.१०८.३

बड़े २ ऋषियों ने जिस बुद्धि को श्रेष्ठ माना है उसे मैं अपने अन्दर प्रविष्ट करता हूँ।

अग्ने मेधाविनं कुरु ६.१०८.४

हे प्रभो ! मुझे बुद्धिमान् बना ।

मेधां सायं मेधां प्रातर्मेधां मध्यन्दिनं परि ६.१०८.५

सायं, प्रातः, मध्याह्न हर समय हम बुद्धि का आह्वान करते हैं ।

अहं वृणे सुमतिं विश्ववाराम् ७.१५.१

मैं विश्ववारा सुमति का वरण करता हूँ ।

मा सुमतिं कृधि १७.१.७

प्रभो ! मुझे मतिमान् बना ।

अहं सुमेधा वर्चस्वी १६.४०.२

मैं बहुत बुद्धिमान् और वर्चस्वी बनूँ ।

भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसदि २०.१३.३

प्रभु के सत्सङ्ग से हमारी बुद्धि तीव्र और भद्र हो जाये ।

 

श्रद्धा

शृण्वन्तु मे श्रद्दधानस्य देवाः ४.३५.७

देव मुझ श्रद्धालु की प्रार्थना पूर्ण करें।

येऽश्रद्धा धनकाम्या क्रव्यादा समासते १२.२.५१

जो श्रद्धा-पूजा को छोड़ कर केवल धन के पीछे पड़े हैं वे मानो चिताग्नि का स्वागत कर रहे हैं।

एतं लोकं श्रद्दधानाः सचन्ते १२.३,७

श्रद्धालु जन ही स्वर्ग प्राप्त करते हैं।

स मे श्रद्धां च मेधां च जातवेदाः प्रयच्छतु १६.६४.१

प्रभु मुझे श्रद्धा और बुद्धि प्रदान करे।

 

ऋग्वेद, श्रद्धा-सूक्त (१०. १५१) से—

१. श्रद्धया विन्दते वसु

श्रद्धा से ऐश्वर्य मिलता है।

२. श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यन्दिनं परि

हम प्रातः श्रद्धा का आह्वान करते हैं, मध्याह्न में श्रद्धा का आह्वान करते हैं।

३. श्रद्धे श्रद्धापयेह नः

हे श्रद्धे ! हमें जीवन में श्रद्धालु बना दे।

विद्या

मय्येवास्तु मयि श्रुतम् १.१.३

जो कुछ श्रवण करूँ वह मुझे स्मरण रहे।

सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन विराधिषि १.१.४

वेदादि शास्त्रों से हम परिचय रखें, शास्त्रों से अपरिचित न हों।

पातु नो देवी सुभगा सरस्वती ६.३.२

सौभाग्यदात्री वेदमाता हमारी रक्षा करे।

येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि सरस्वति तमिह धातवे कः ७.१०.१

हे वेदमाता ! जिससे तू सबको पुष्ट करती है अपने उस स्तन का हमें भी पान करा।

ऋचं साम यजामहे याभ्यां कर्माणि कुर्वते ७.५४.१

ऋक्, साम का हम आदर करते हैं जिनसे मनुष्य सत्कर्मों में लगते हैं।

प्रियाः श्रुतस्य भूयास्म ७.६१.१

हम वेद-प्रिय बनें।

श्रुतानि शृण्वन्तो वयमायुष्मन्तः सुमेधसः ७.६१.२

शास्त्र श्रवण करते हुए हम आयुष्मान् और मेधावी बनें।

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् ६.१०.१८

ऋचायें सर्वोच्च प्रभु की ही महिमा गा रही हैं।

यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति

जिसने ऋचाओं में वर्णित प्रभु को नहीं जाना वह ऋचायें रट कर क्या करेगा।

अन्तर्दधे ऽहं सलिलेन वाचः १७.१.२६

वेदवाणी के अमृत-सलिल में मैं डुबकी लगाता हूँ।

सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते १८.१.४१

देवत्व के इच्छुक जन वेदमाता का आह्वान करते हैं।

सरस्वतीं सुकृतो हवन्ते

सुकर्मा जन वेदमाता का आह्वान करते हैं।

सरस्वतीं पितरो हवन्ते १८.१.४२

पितृजन वेदमाता का आह्वान करते हैं।

शं सरस्वती सह धीभिरस्तु १९.११.२

वेदमाता अपने अन्दर निहित ज्ञानों से हमें सुख-शान्ति देने वाली हो।

स्तुता मया वरदा वेदमाता १९.७१.१

मैंने वेदमाता का स्तवन किया है, वह वरदात्री है।

कृतमिष्टं ब्रह्मणो वीर्येण १९.७२.१

वेद के ज्ञान ने हमारा भला किया है।

 

तेजस्विता

अग्ने वर्चस्विनं कुरु ३.२२.३

अग्ने ! मुझे तेजस्वी बना।

वर्चसा ऽभिषिञ्चामि मामहम् ३.२२.६

तेज से मैं अपने आपको सिंचित करूँ।

भर्गस्वतीं वाचमावदानि ६.६९.२

तेजोमयी वाणी बोलूँ।

मयि वर्चो अथो यशः ६.६९.३

मुझ में तेज हो, मुझे यश मिले।

उद् वयं तमसस्परि ७.५३.७

निस्तेजता से हम ऊपर उठ जायें।

तेजो ऽसि तेजो मयि धेहि ७.८९.४

अग्ने ! तू तेजस्वी है, मुझे भी तेजस्वी बना।

अहं भूयास सवितेव चारुः १३.१.३८

मैं सूर्य की तरह कान्तिमान् बनूँ।

सं धाता सृजतु वर्चसा १४.१.३४

विधाता हमें तेज से सींच दे।

स यथा त्वं भ्राजता भ्राजो ऽस्येवाहं भ्राजता भ्राज्यासम् १७.१.२०

प्रभो ! जैसे तू तेज से जगमगा रहा है वैसे मैं भी जगमगाऊँ।

वर्चसा मां समनक्त्वग्निः १८.३.११

तेजोमय प्रभु मुझे तेज से चमका दे।

वर्चो गृहीत्वा पृथिवीमनुसचरेम १९.५८.३
हम तेजस्वी होकर भूमि पर विचरें।

 

यश

यशसः स्याम ६.३९.२
हम यशस्वी बनें।

अहमस्मि यशस्तमः ६.३९.३
मैं सब से बढ़कर यशस्वी होऊँ।

यशस मेन्द्रो मघवान् कृणोतु ६.५८.१
ऐश्वर्यवान इन्द्र मुझे यशस्वी बनाये।

यशसं मा देवः सविता कृणोतु
सविता प्रभु मुझे यशस्वी बनाये।

वयं सर्वेषु यशसः स्याम ६.५८.२
हम सब में यशस्वी बनें।

यशाः पृथिव्या अदित्या उपस्थे १३.१.३८
मैं यशस्वी होकर मातृभूमि की गोद में बैठूँ।

यशो गृहीत्वा पृथिवीमनु संचरेम १६.५८.३
हम यशस्वी होकर पृथ्वी पर विचरें ।

अस्मे धेहि श्रवो बृहद् २०.७१.१४
हे प्रभो ! हमें महान् यश प्रदान कर ।

इन्द्र ज्येष्ठं न आभर ओजिष्ठं पपुरि श्रवः २०.८०.१
प्रभो ! हमें महान्, तेजोमय और पूर्णता की ओर ले जाने वाला यश प्रदान कर ।

 

सत्य

सत्यं वदिष्यामि नानृतम् ४.९.७
सत्य बोलूँगा, असत्य नहीं ।

सत्येनोत्तभिता भूमिः १४.१.१
सत्य से भूमि थमी है ।

ऋतेनादित्यास्तिष्ठन्ति
सत्य से देवों की स्थिति है ।

ऋतं वदन्तो अनृतं रपेम १८.१.४

हम सदा सत्य बोलते आये हैं, अब क्या असत्य बोलें ?

ऋतस्य पन्थामनुपश्य १८.४.३

हे नर ! सत्य के मार्ग को देख ।

शुभमनस्कता

जायाः पुत्राः सुमनसो भवन्तु ३.४.३

स्त्री-पुत्र सब शुभ मन वाले हों ।

अगन्महि मनसा सं शिवेन ६.५३.३

हम शुभ मन से समन्वित हों ।

सुमनसं मा कृणु स्वस्तये ६.६६.३

प्रभो ! मुझे शुभ मन वाला बना, जिससे मेरा कल्याण हो ।

मा युष्महि मनसा दैव्येन ७.५२.२

दिव्य मन से हम पृथक् न हों ।

रायां वयं सुमनसः स्याम १४.२.३६

ऐश्वर्य पाकर हमारा मन शुभ रहे।

 

पवित्रता

पुनन्तु मा देवजनाः ६.१९.१

देवजन मुझे पवित्र जीवन वाला बनायें।

पुनन्तु मनवो धिया

ज्ञानीजन अपने सदुपदेश से मुझे पवित्र करें।

पुनन्तु विश्वा भूतानि

सब भूत मुझे पवित्रता दें।

पवमानः पुनातु मा

पावक प्रभु मुझे पवित्र करे।

अस्मान् पुनीहि चक्षसे ६.१९.३

प्रभो! हमें पवित्र कर, जिससे तेरे दर्शनों के अधिकारी हो सकें।

स्योना माप: पवनैः पुनन्तु १८.३.११

सुखदायी जल अपनी शोधकताओं से मुझे पवित्र करें।

 

पाप-मोचन

मा नो विदद् वृजिना द्वेष्या या १.२०.१

पाप हमारे पास न आयें, वे द्वेष करने योग्य हैं।

विश्वा ह्यग्ने दुरिता तर त्वम् २.६.५

सब पापाचरणों को, हे प्रभो! हम से दूर कर।

अपास्मत् सर्वं दुर्भूतम् ३.७.७

सब प्रकार का दुर्भाव हमारे अन्दर से निकल जाये।

व्यहं सर्वेण पाप्मना ३.३१.१

सब पापों से मैं अलग रहूँ।

स नो मुञ्चत्वंहसः ४.२४.१

प्रभु हमें पाप से मुक्त करे।

अप नः शोशुचदघम् ४.३३.१

हमारा पाप जल कर भस्म हो जाये।

पातु सोमो नो अंहसः ६.३.२

सोम प्रभु हमें पाप से बचाये।

अव मा पाप्मन् सृज ६.२६.१

हे पाप ! मुझे छोड़ दे।

यो नः पाप्मन् न जहासि तमु त्वा जहिमो वयम् ६.२६.२

हे पाप ! तू हमें नहीं छोड़ता तो हम तुझे छोड़ देंगे।

परो ऽपेहि मनस्पाप किमशस्तानि शंससि ६.४५.१

हे मन के पाप ! दूर हो, क्यों मुझे निन्दित सलाहें देता है।

परेहि न त्वा कामये

दूर हो, मन के पाप ! मुझे तेरी चाह नहीं है।

प्रचेता न आङ्गिरसो दुरितात् पात्वंहसः ६.४५.३

ज्ञानी और प्राणप्रिय प्रभु हमें पापाचरणों से बचाये।

मरीचीर्धूमान् प्रविशानु पाप्मन् ६.११३.२

हे पाप ! किरणों में जाकर जल जा, धुएँ में घुट जा।

विश्वे शुम्भन्तु मैनसः ६.११५.३

सब देव मुझे पाप से छुड़ा कर निर्मल करें।

अपैतु सर्वं मत् पापम् १०.१.१०

सब प्रकार का पाप मुझ से दूर हो जाये।

आण्डात् पतत्रीवामुक्षि विश्वस्मादेनसस्परि १४.२.४४

अण्डे के आवरण से पक्षी की तरह मैं सब पाप से छूट जाऊँ।

मा मा प्रापत् पाप्मा मोत मृत्युः १७.१.२९

पाप और मौत मेरे पास न फटकें।

न नः पश्चादघं नशत् २०.२०.६

पाप हमारे पीछे न लगे।

अपेहि मनसस्पते ऽपक्राम परश्चर २०.९६.२४

हे मन पर अधिकार करने वाले पाप! दूर हट, भाग, परे हो जा।

 

दुःस्वप्न-निवारण

दुष्वप्न्यं दुरितं निष्वास्मद् ७.८३.४

प्रभो ! दुःस्वप्नजनित पाप को हम से दूर कर।

पर्यावर्ते दुष्वप्न्यात् पापात् ७.१००.१

दुःस्वप्न के पाप से मैं दूर रहूँ।

परा स्वप्नमुखाः शुचः

स्वप्नजन्य शोक मुझसे दूर रहें।

उषो यस्माद् दुष्वप्न्यादभैष्माप तदुच्छतु १६.६.२

हे उषः ! दुःस्वप्न हमसे दूर हो, जिससे हम सदा डरते हैं।

 

ईर्ष्या-विनाश

यथोत मम्रुषो मन एवेर्ष्योर्मृतं मनः ६.१८.२

ईर्ष्यालु का मन मुर्दा होता है, जैसे मरणासन्न का मन।

त ईर्ष्यां मुञ्चामि ६.१८.३
मैं तेरे ईर्ष्या के दुर्गुण को तुझ से छुड़ा दूँगा।

एतामेतस्येर्ष्यां मुद्राग्निमिव शमय ७.४५.२
इस व्यक्ति की ईर्ष्या को शान्त कर, जैसे पानी से अग्नि।

 

निर्भयता

मे प्राण मा बिभेः २.१५.१
हे मेरे प्राण! भयभीत मत हो।

अभयं सोमः सविता नः कृणोतु ६.४०.१
चांद-सूर्य हमें निर्भयता की शिक्षा दें।

अशत्रुरिन्द्रो अभयं नः कृणोतु ६.४०.२
प्रभु हमें अशत्रुता और निर्भयता दे।

स्वस्ति नो अभयं च नः ११.२.३१
हमें सुख मिले, हम निर्भय हों।

विवस्वान्नो अभय कृणोतु १८.३.६१
सूर्य हमें निर्भयता दे।

यतो भयमभयं तन्नो अस्तु १९.३.४

जिससे बड़े-बड़ों को भय लगता है वह भी हमें भयभीत न कर सके।

अभयं नो अस्तु १९.१४.१

हमें निर्भयता प्राप्त हो।

यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि १९.१५.१

प्रभो! जिस से हम भय खाते हैं उससे हमें निर्भय कर।

अभयं नः करत्यन्तरिक्षम् १९.१५.५

अन्तरिक्ष हमें निर्भयता सिखाये।

अभयं द्यावापृथिवी उभे इमे

ये दोनों द्यावापृथिवी हमें निर्भयता का पाठ पढ़ायें।

अभयं पश्चादभयं पुरस्तात्

पश्चिम से हमें भय न हो, पूर्व से भय न हो।

उत्तरादधरादभयं नो अस्तु

उत्तर से हमें भय न हो, दक्षिण से भय न हो।

अभयं मित्रादभयममित्रात् १९.१५.६

मित्र से हमें भय न हो, अमित्र से भय न हो।

अभयं ज्ञातादभयं पुरो यः

परिचित से हमें भय न हो, आगे खड़े अपरिचित से भय न हो।

अभयं नक्तमभयं दिवा नः

रात्रि में हमें किसी से भय न हो, दिन में भय न हो।

इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत् २०.२०.७

प्रभु हमें सब दिशाओं से निर्भय कर दे।

 

ऋण-मोचन

अनृणो भवामि ६.११७.१

मैं किसी का ऋणी नहीं रहता।

अपमित्य धान्यं यज्जघसाहमिदं तदग्ने अनृणो भवामि ६.११७.२

जो मैंने उधार का अन्न खाया है उसे चुका कर ऋण-मुक्त हो जाता हूँ।

अनृणा अस्मिन्ननृणाः परस्मिन् तृतीये लोके
अनृणाः स्याम ६.११७.३

इस आश्रम में, द्वितीय आश्रम में, तृतीय आश्रम में सदा ही हम ऋण-मुक्त रहें।

 

मधुर-भाषण

जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधूलकम् १.३४.२

मेरे जिह्वाग्र पर मिठास हो, जिह्वामूल में मिठास हो।

वाचा वदामि मधुमत् १.३४.३

वाणी से मधुर भाषण करूँ।

गोसनिं वाचमुदेयम् ३.२०.१०

गो-दूध जैसी मीठी वाणी बोलूँ।

पयस्वन्मामकं वचः ३.२४.१

मेरा वचन रसीला हो।

यद् वदामि मधुमत् तद् वदामि १२.१.५८

जो कुछ बोलूँ मीठा बोलूँ।

ऊर्जा मधुमती वाक् १६.२.१

मेरी वाणी बलवती और मिठासभरी हो।

मधुमतीं वाचमुदेयम् १६.२.२

मीठी वाणी बोलूँ।

वाचं वदत भद्रया ३.३०.३

भद्र वाणी बोलो।

अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत ३.३०.५

परस्पर प्रिय वचन बोलते हुए रहो।

प्रवदासि वल्गु १२.३.१८

रम्य वाणी बोल।

गृभाय जिह्वया मधु २०.४.२

जिह्वा में माधुर्य ला।

घृतात् स्वादीयो मधुनश्च वोचत २०.६५.२

घृत और मधु से भी मीठा वचन बोलो।

जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम् ३.३०.२

पत्नी पति से मीठी और शान्त वाणी बोले।

 

मधुर जीवन

नः मधुमतस्कृधि १.३४.१

हमें माधुर्यमय बना दे।

मधुमन्मे निक्रमणं मधुमन्मे परायणम् १.३४.३

मेरा जाना मधुर हो, मेरा आना मधुर हो।

भूयासं मधुसदृशः

मैं मधु जैसा मीठा हो जाऊँ।

मधोरस्मि मधुतरो मदुघान्मधुमत्तरः १.३४.४

मैं मधु से अधिक मीठा होऊँ, महुए से अधिक मीठा होऊँ।

अश्विना सारघेण मा मधुनाक्त शुभस्पती ६.६९.२

हे अश्वी देवो! मेरे जीवन में मधु जसा मिठास भर दो।

वयं मधुमन्तः स्याम ७.६८.२

हम मधुर जीवन वाले बनें।

मधु जनिषीय मधु वशिषीय ६.१.१४

मैं जीवन में माधुर्य पैदा करूँ, माधुर्य की याचना करूँ।

 

सुख-शान्ति

शमस्तु तन्वे मम १.१२.४

मेरे शरीर को सुख मिले।

स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु १.३१.४

हमारे माता-पिता को सुख मिले।

स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः

गौओं का, पुरुषों का, सारे जगत् का कल्याण हो।

शं च नो मयश्च नः ६.५७.३

हमें शान्ति मिले, सुख मिले।

शं नो वातो वातु ७.६६.१

वायु हमारे लिये सुखकर होता हुआ चले।

शं नस्तपतु सूर्यः

सूर्य हमारे लिये सुखकर होता हुआ तपे।

अहानि शं भवन्तु नः शं रात्री प्रतिधीयताम्

दिन हमारे लिये सुखकर हों, रात्रि सुखकर हो।

स्वस्ति न इन्द्रो मघवान् कृणोतु ७.८६.१

ऐश्वर्यशाली प्रभु हमें सुखी करे।

सुमृडीको भवतु विश्ववेदाः ७.६१.१

विश्ववेत्ता प्रभु हमारे लिये अति सुखकारी हो।

जीवेषु भद्रं तन्मयि १८.२.५२

सब जीवों को सुख मिले, मुझे सुख मिले।

सर्वमेव शमस्तु नः १६.६.२

सब कुछ हमें सुख-शान्ति देने वाला हो।

शं नो मित्रः शं वरुणः शं विष्णुः शं प्रजापतिः १६.६.६

मित्र, वरुण, विष्णु, प्रजापति हमें सुख-शान्ति दें।

इन्द्रो मे शर्म यच्छतु ब्रह्मा मे शर्म यच्छतु १६.६.१२

इन्द्र मुझे सुख-शान्ति दे, ब्रह्मा सुख-शान्ति दे।

शं मे अस्त्वभयं मे अस्तु १६.६.१३
मुझे सुख-शान्ति मिले, अभय मिले।

शं नो धाता शमु धर्त्ता नो अस्तु १६.१०.३
'विधाता' हमें सुख दे, 'विधर्ता' सुख दे।

शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु १६.१०.४
ज्योतिर्मुख अग्नि हमें सुख देने वाला हो।

शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु
पुण्यात्मा लोगों के पुण्यकर्म हमें सुख दें।

शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु १६.१०.८
महाप्रकाशक सूर्य हमें सुख-शान्ति देता हुआ उदित हो।

शं नो भवन्तु प्रदिशश्चतस्रः
चारों दिशायें हमें सुख-शान्ति देने वाली हों।

शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु
ये अचल पर्वत हमें सुख-शान्ति दें।

शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः
समुद्र हमें सुख-शान्ति दे, नदियां सुख-शान्ति दें।

शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः १६.१०.६

राष्ट्रभूमि अपने राजनियमों से हमें सुख-शान्ति दे।

शं नो देवः सविता त्रायमाणः १६.१०.१०

रक्षक सविता देव हमें सुख-शान्ति दे।

शं नो भवन्तूषसो विभातीः

प्रकाशवती उषायें हमें सुख-शान्ति देने वाली हों।

शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः

बादल हम प्रजाओं पर सुख-शान्ति बरसाये।

शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु १६.११.१

सत्यव्रती जन हमें सुख-शान्ति दें।

 

अमरता

अमृता वयम् ३.३१.११

हम अमर हो जायें।

नाकस्य पृष्ठे समिषा मदेम ७.८०.१

हम मुक्तिधाम में पहुँच कर आनन्द-रस का आस्वादन करें।

अनागसो अदितये स्याम ७.८३.३

निष्पाप होकर हम अमरता के अधिकारी हों।

मर्त्यो ऽयममृतत्वमेति १८.४.३७

अवश्य ही मानव अमर हो सकता है।

तृतीये नाके अधि विश्रयस्व १८.४.३

हे नर! मोक्षलोक में स्थान पा।

अमृतं मोपतिष्ठतु १९.४३.७

मुझे अमरता प्राप्त हो।



तृतीय अध्याय

गृहस्थ-जीवन

नारी के प्रति

इयमग्ने नारी पतिं विदेष्ट २.३६.३

प्रभो ! यह नारी पति को प्राप्त करे।

सुवाना पुत्रान् महिषी भवाति

पुत्रों की जननी बनती हुई यह घर में रानी होकर रहे।

गत्वा पतिं सुभगा विराजतु

पतिगृह में जाकर यह सदा सौभाग्यवती बनी रहे।

ब्रह्मणस्पते पतिमस्यै रोचय १४.१.३१

हे प्रभो पति को पत्नी का प्यारा बना।

इमां नारीं सुकृते दधात १४.१.५६

इस नारी को उत्तम कर्मों में लगाओ।

दीर्घायुरस्या यः पतिर्जीवाति शरदः शतम् १४.२.२

प्रभु करे इसका पति दीर्घायु होकर सौ वर्ष जीता रहे।

 

शिवा भव पुरुषेभ्यो गोभ्यो अश्वेभ्यः शिवा ३.२८.३

हे नारि ! घर के पुरुषों को सुख दे, गौ-घोड़ों को सुख दे।

इह सहस्रसातमा भव ३.२८.४

इस गृहाश्रम में तू बहुत दान करने वाली हो।

पशून् यमिनि पोषय

हे गृहपत्नी ! पशुओं का पालन-पोषण किया कर।

आ वीरोऽत्र जायतां पुत्रस्ते दशमास्यः ३.२३.२

दस मास गर्भ में रहा हुआ तेरा वीर पुत्र पैदा हो।

पुमांसं पुत्रं जनय ३.२३.३

पौरुषवान् पुत्र को जन्म दे।

भवासि पुत्राणां माता

पुत्रों की माता बन।

विन्दस्व त्वं पुत्रं नारि यस्तुभ्यं शमसद् ३.२३.५

हे नारि ! पुत्र को पा, जो तुझे सुख देने वाला हो।

स्वे क्षेत्रे अनमीवा विराज ११.१.२२

अपने घर में नीरोग रह।

गृहान् गच्छ गृहपत्नी यथासः १४.१.२०

पतिगृह को जा, घर की रानी बन।

अस्मिन् गृहे गार्हपत्याय जागृहि १४.१.२१

घर में गृहकार्यों के लिये जागरूक रह।

पत्युरनुव्रता भूत्वा संनह्यस्वामृताय कम् १४.१.४२

पतिव्रता होकर अमृत के लिये कटिबद्ध रह।

त्वं सम्राज्ञ्येधि पत्युरस्तं परेत्य १४.१.४३

जा, पति के घर जाकर रानी बन।

सम्राज्ञ्येधि श्वशुरेषु सम्राज्ञ्युत देवृषु १४.१.४४

श्वसुर की दृष्टि में रानी हो, देवर की दृष्टि में रानी हो।

ननान्दुः सम्राज्ञ्येधि सम्राज्ञ्युत श्वश्र्वाः

ननद की दृष्टि में रानी हो, सास की दृष्टि में रानी हो।

दीर्घं त आयुः सविता कृणोतु १४.१.४७

प्रभु तेरी आयु लम्बी करे।

शिवा स्योना पतिलोके विराज १४.१.६४

मंगलमयी, सुखदायनी होकर पतिगृह में रह।

आरोह चर्मोपसीदाग्निम् १४.२.२४

मृगचर्म पर बैठ, अग्निहोत्र कर।

सुज्यैष्ठ्यो भवत् पुत्रस्त एषः

तेरा पुत्र संसार में बड़ा बने।

संपत्नो प्रतिभूषेह देवान् १४.२.२५

श्रेष्ठ पत्नी बन कर घर में आये देवों का सत्कार किया कर।

स्योना भव श्वशुरेभ्यः स्योना पत्ये गृहेभ्यः १४.२.२७

श्वसुर को सुख दे, पति को सुख दे, घर के अन्य सब लोगों को सुख दे।

सूर्येव नारि विश्वरूपा महित्वा १४.२.३२

हे नारि! सूर्यप्रभा की तरह रूपवती और महिमामयी हो।

प्रबुध्यस्व सुबुधा बुध्यमाना दीर्घायुत्वाय शत-शारदाय १४.२.७५

सौ वर्ष की लम्बी आयु पाने के लिये तू सदा विद्यावती, प्रबुद्ध और जागृत रह।

 

पति-पत्नी

रय्या सहस्रवर्चसेमौ स्तामनुपक्षितौ ६.७८.२

तेजोमयी सम्पत्ति पाकर ये पति-पत्नी सदा अक्षीण बने रहें।

त्वष्टा सहस्रमायूंषि दीर्घमायुः कृणोतु वाम् ६.७८.३

सहस्र वर्ष तक प्रभु तुम दम्पती की आयु को लम्बा करें।

प्राचीं प्राचीं प्रदिशमारभेथाम् १२.३.७

तुम दोनों निरन्तर उन्नति की दिशा में अग्रसर होते चलो।

मा दम्पती पौत्रमघं निगाताम् १२.३.१४

पति-पत्नी को पुत्र-वियोग के सन्ताप का पात्र न होना पड़े।

क्षत्रेणात्मानं परिधापयाथः १२.३.५१

तुम अपने आपको क्षात्रबल से युक्त करो।

इहैव स्तं मा वियौष्टम् १४.१.२२

तुम दोनों इसी प्रेमसूत्र में बँधे रहो, एक दूसरे का परित्याग मत करो।

विश्वमायु र्व्यश्नुतम्

तुम दोनों पूर्ण आयु प्राप्त करो।

क्रीडन्तौ पुत्रै र्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वस्तकौ

तुम दोनों रम्य घर में पुत्र-पौत्रों के साथ हँसते-खेलते हुए आनन्दपूर्वक रहो।

युवं भगं संभरतं समृद्धमृतं वदन्तावृतोद्येषु १४.१.३१

तुम दोनों यथेष्ट धन-दौलत पैदा करो, किन्तु सच बोल कर।

स्थाणुं पथिष्ठामप दुर्मतिं हतम् १४.२.६

दुर्मति जो कि रास्ते की रुकावट है उसे तुम दूर कर दो।

इह पुष्यतं रयिम् १४.२.३७

तुम दोनों मिल कर भरपूर धन कमाओ।

दीर्घं वामायुः सविता कृणोतु १४.२.३६

प्रभु तुम्हारी आयु लम्बी करे।

आ वां प्रजां जनयतु प्रजापतिः १४.२.४०

प्रभु तुम पति-पत्नी को सन्तान दे।

चक्रवाकेव दम्पती १४.२.६४

पति-पत्नी चकवा-चकई की तरह प्रेमसूत्र में बद्ध हों।

प्रजयैनौ स्वस्तकौ विश्वमायुर्व्यश्नुताम्

ये दोनों सन्तान सहित रम्य घर में रहते हुए पूर्ण आयु प्राप्त करें।

 

पति के उद्गार

गृह्णामि ते सौभगत्वाय हस्तम् १४.१.५०

सौभाग्य के लिये मैं तेरा पाणिग्रहण करता हूँ।

मा व्यथिष्ठा मया सह प्रजया च धनेन च १४.१.४८

मेरे साथ रहते हुए तुझे कोई क्लेश न हो, न सन्तान का न धन का।

पत्नी त्वमसि धर्मणाऽहं गृहपतिस्तव १४.१.५१

आज से तू मेरी धर्मपत्नी है, मैं तेरा पति हूँ।

ममेयमस्तु पोष्या १४.१.५२

पत्नी का पालन-पोषण करना मैं अपना कर्तव्य समझूँ।

मया पत्या प्रजावति सं जीव शरदः शतम्

हे पुत्रवति ! मुझ पति के साथ तू सौ वर्ष जी।

वासो यत् पत्नीभिरुतं तन्नः स्योनमुपस्पृशात् १४.२.५१

पत्नी के हाथ का बुना सुखदायी वस्त्र मेरे शरीर को सुशोभित करे।

सामाहमस्मि-ऋक् त्वम् १४.२.७१

हे पत्नी ! मैं साम हूँ, तू ऋक् है।

द्यौरहं पृथिवी त्वम्

मैं द्यौ हूँ, तू पृथिवी है।

 

नारी के उद्गार

अहमस्मि सहमाना ३.१८.५

मैं बलवती हूँ।

मामनु प्र ते मनः ३.१८.६

हे पति ! मुझे तेरा मन चाहे।

अक्ष्यौ नौ मधुसंकाशे ७.३६.१

हम दोनों पति-पत्नी की आंखों से माधुर्य टपकता हो।

मन इन्नौ सहासति

हम दोनों का मन मिला रहे।

अन्तः कृणुष्व मां हृदि

हे प्रियतम ! तू मुझे अपने हृदय में स्थान दे।

अभि त्वा मनुजातेन दधामि मम वाससा ७.३७.१

बड़े मन से तैयार किया हुआ। अपने हाथ का वस्त्र मैं तुझे पहनाती हूँ।

ममेदसस्त्व केवलो नान्यासां कीर्तयाश्चन ७.३८.४

हे प्रियतम ! तू मुझ अकेली का होकर रह, अन्य स्त्रियों का नाम भी न ले।

दीर्घायुरस्तु मे पतिर्जीवाति शरदः शतम् १४.२.६३

मेरा पति दीर्घायु हो, सौ वर्ष जिये।

अवीरामिव मामयं शरारुरभिमन्यते २०.१२६.६

अरे, यह घातक मुझे अबला समझ रहा है !

उताहमस्मि वीरिणी

मैं तो वीराङ्गना हूँ।

साधुं पुत्रं हिरण्ययम् २०.१२६.५

मैं साधु और तेजस्वी पुत्र को चाहती हूँ।

 

प्रीतिभाव

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः ३.३०.१

मनुष्यो ! तुम्हारे अन्दर सहृदयता, एकता और प्रीतिभाव पैदा करता हूँ ।

अन्यो अन्यमभिहर्यत

एक दूसरे से प्रेम करो ।

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः ३.३०.२

पुत्र पिता का आज्ञाकारी हो, माता के साथ एक मन वाला हो ।

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा ३.३०.३

भाई भाई से द्वेष न करे, बहिन बहिन से द्वेष न करे ।

मा वियौष्ट ३.३०.५

तुममें परस्पर फूट न हो ।

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः ३.३० ६

सब परस्पर मिल कर खान-पान किया करो ।

समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि

एक सूत्र में तुम्हें बांधता हूँ।

सध्रीचीनान् वः संमनसस्कृणोमि ३.३०.७

तुम्हें मिल कर रहने वाला और एक मन वाला बनाता हूँ।

सायं प्रातः सौमनसो वो अस्तु

सायं प्रातः आप लोगों में सौमनस्य रहे।

सं जानीध्वं सं पृच्यध्वं सं वो मनांसि जानताम् ६.६४.१

परस्पर जान-पहिचान करो, मिल कर रहो, तुम्हारे मन एक हों।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं व्रतं सह चित्तमेषाम् ६.६४.२

सबका एक मन्त्र हो, एक समिति हो, एक व्रत हो, एक चित्त हो।

समानेन वो हविषा जुहोमि

तुम सबको समानता की हवि से आहुत करता हूँ।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ६.६४.३

तुम्हारा निश्चय एक हो, तुम्हारे हृदय एक हों।

समानमस्तु वो मनः

तुम्हारा मन एक हो।

सर्वा दिशः समनसः सध्रीचीः ६.८८.३

सब दिशावासी एक मन वाले और मिल कर रहने वाले हों।

प्रणीतीरभ्यावर्तस्व विश्वेभिः सखिभिः सह ७.१०५.१

सब साथियों के साथ प्रणय का व्यवहार रख।

प्रियं पितृभ्य आत्मने ब्रह्मभ्यः कृणुता प्रियम् १२.२.३४

बड़े-बूढ़ों के प्रति, अपने प्रति, ब्रह्मज्ञानियों के प्रति प्रिय व्यवहार करो।

व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणः १९.५८.४

संगठन करो, उससे तुम्हारी रक्षा होगी।

प्रियं सर्वस्य पश्यत, उत शूद्र उतार्ये १९.६२.१

सबका भला सोचो, चाहे शूद्र हो चाहे आर्य।

 

अनमित्रं नो अधरादनमित्रं न उत्तरात् ६.४०.३

दक्षिण में हमारा कोई शत्रु न हो, उत्तर में कोई शत्रु न हो।

इन्द्रानमित्रं नः पश्चादनमित्रं पुरस्कृधि

हे प्रभो ! पश्चिम में हमारा कोई शत्रु न हो, पूर्व में कोई शत्रु न हो।

सहभक्षाः स्याम ६.४७.१

हम मिल कर खान-पान करने वाले हों।

संज्ञान नः स्वेभिः सज्ञानमरणेभिः ७.५२.१

अपनों से हमारा प्रेम-परिचय हो, अन्यों से प्रेम-परिचय हो।

संजानामहै मनसा ७.५२.२

हम मन में एक दूसरे के प्रति प्रेमभाव रखें।

ना नो द्विक्षत कश्चन १२.१.१८

कोई भी हमसे द्वेष न करे।

मा सो अस्मान् द्विक्षत मा वयं तम् १२.२.३३

वह हमसे द्वेष न करे, हम उससे द्वेष न करें।

प्रियं प्रियाणां कृणवाम १२.३.४६

प्रियजनों का हम प्रिय-सम्पादन ही करें।

योऽस्मान् द्वेष्टि तमात्मा द्वेष्टु १६.७.५

जो हमसे द्वेष रखे उसका आत्मा ही उससे ग्लानि करने लगे।

प्रियो देवानां भूयासम् १७.१.२

मैं देवों का प्यारा बनूँ।

प्रियः प्रजानां भूयासम् १७.१.३

मैं प्रजाओं का प्यारा बनूँ।

प्रियः पशूनां भूयासम् १७.१.४

मैं पशुओं का प्यारा बनूँ।

प्रियः समानानां भूयासम् १७.१.५

मैं अपने समकक्ष लोगों का प्यारा बनूँ।

असपत्नाः प्रदिशो मे भवन्तु १६.१४.१

किसी भी दिशा में मेरा कोई शत्रु न रहे

सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु १६.१५.६

सब दिशायें मेरी मित्र हो जायें।

प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु १९.६२.१

मुझे ब्राह्मणों का प्यारा बना, क्षत्रियों का प्यारा बना।

सखायाविव सचावहै ६.४२.१

आ, हम दोनों परस्पर मित्रों की तरह रहें।

मम चित्तमुपायसि ६.४२.३

हे भाई ! मेरे साथ एकमन हो जा।

न वै त्वा द्विष्मः १९.१४.१

आ, अब हम तुझसे द्वेष नहीं रखेंगे।

 

गृह-समृद्धि

इहैतु सर्वो यः पशुरस्मिन् तिष्ठतु या रयिः १.१५.२

मेरे घर में पशु हों, मेरे घर में धन-धान्य भरा हो

विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु १.३१.४

सब प्रकार का प्रचुर धन हमें प्राप्त हो।

वयं स्याम पतयो रयीणाम् ३.१०.५

हम ऐश्वर्यों के राजा बन जायें।

मे भूयो भवतु मा कनीयः ३.१५.५

मुझे बहुत सा धन प्राप्त हो, कम नहीं।

उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम् ३.१६.४

हम प्रातः-सायं-मध्याह्न हर समय ऐश्वर्यवान् दीखें।

वयं भगवन्तः स्याम ३.१६.५

हम बहुत ऐश्वर्यवान् हों।

स नो भग पुर एता भवेह

हे ऐश्वर्य ! तू हमारे आगे २ दौड़ा चल।

इह पुष्टिरिह रसः ३.२८.४

मेरे घर में पुष्टि आये, रस आये।

परोऽपेह्यसमृद्धे ५.७.७

परे भाग, ओ दरिद्रता !

स नः पावको द्रविणे दधातु ६.४७.१

पावक प्रभु हमें धन-सम्पत्ति प्राप्त कराये।

स नो वसून्याभर ६.६३.४

हे प्रभो ! हमें अपार सम्पत्ति प्राप्त करा।

आ पुष्टमेत्वा वसु ६.७६.२

हमें भरपूर अन्न प्राप्त हो, धन प्राप्त हो।

कृणोमि भगिनं मा ६.१२६.१

अपने आपको ऐश्वर्यवान् बनाता हूँ।

धाता दधातु नो रयिमीशानो जगतस्पतिः ७.१७.१

जगत्पति प्रभु हमें ऐश्वर्य प्रदान करे।

स मायमग्निः सिञ्चतु प्रजया च धनेन च ७.३३.१

यह यज्ञाग्नि मुझे सन्तान और धन से सिंचित करे।

समैतु विश्वतो भगः ७.५०.२

चारों ओर से धन मेरे पास खिंचा चला आये।

गोजिद् भूयासमश्वजिद् धनजयो हिरण्यजित् ७.५०.८

गौ, अश्व, धन-धान्य, सोना-चांदी सब ऐश्वर्य मैं प्राप्त कर लूँ।

उपहूता इह गाव उपहूता अजावयः ७.६०.५

हमारे घरों में गौएँ हों, भेड़ हों, बकरियां हों।

अथो अन्नस्य कीलाल उपहूतो गृहेषु नः

हमारे घरों में रसीले २ अन्न हों।

आ वयं प्याशिषीमहि गोभिरश्वैः प्रजया पशुभि-
र्गृहैर्धनेन ७.८१.५

गौ, घोड़े, सन्तान, पशु, घर, धन-धान्य से हम फूलें फलें।

अस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त ७.८२.१

हे देवो ! हमें श्रेष्ठ धन-सम्पत्ति प्राप्त कराओ।

घृतस्य धारा मधुमत् पवन्ताम्

हमारे घरों में घृत की मधुर धारायें प्रवाहित होती रहें।

रमन्तां पुण्या लक्ष्मीः ७.११५.४

पुण्य से कमाई लक्ष्मियां हमारे घरों में रमण करें।

गावः सन्तु प्रजाः सन्त्वथो अस्तु तनूबलम् ६.४.२०

हमारे पास गौएँ हों, सन्तान हों, शारीरिक बल हो।

द्रविणं मोपतिष्ठतु १०.१.१०

धन मेरे चरणों में लोटे।

भगो अनु प्रयुङ्क्ताम् १२.१.४०

ऐश्वर्य हमारा अनुचर बन जाये।

इन्द्र एतु पुरोगवः
ऐश्वर्य का देवता इन्द्र हमारे आगे २ चले।

वसुमान् भूयासम् १६६.४
मैं धनी बनूँ।

वसु मयि धेहि
प्रभो ! मुझे धन दे।

अञ्जन्तु देवा मधुना घृतेन १८.३.१०
देवता मुझे मधु और घृत से सींच दें।

आप्यायमानाः प्रजया धनेन १८.३.१७
सन्तान और धन से हम फूलें-फलें।

स्याम सुरभयो गृहेषु
हम सौरभमय होकर घरों में रहें।

गोवदश्ववन्मय्यस्तु पुष्टम् १८.३.६१
मुझे गौ-घोड़ों से युक्त पुष्कल सम्पत्ति प्राप्त हो।

अस्माँ इन्द्र वसौ दधः २०.५६.३
प्रभो ! हमें धन के मध्य में बैठा दे।

 

दान

त्वं नो देव दातवे रयिं दानाय चोदय ३.२०.५

हे देव ! दानी को दान करने के लिये अधिकाधिक धन दे।

अदित्सन्तं दापयतु प्रजानन् ३.२०.८

हे प्रभो ! आप सर्वज्ञ हैं, जो दान नहीं करता उसे दान की प्रेरणा करें।

शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकिर ३.२४.५

सौ हाथों से कमा, हजार हाथों से दान कर।

मा त्वा वोचन्नराधसं जनासः ५.११.७

ऐसा बन कि लोग तुझे कंजूस न कहें।

हस्तौ पृणस्व बहुभिर्वसव्यैराप्रयच्छ दक्षिणादोत सव्यात् ७.२६.८

दायें-बायें दोनों हाथों से भर २ कर धन दान कर।

अप्रोतं वासो दद्याद् हिरण्यमपि दक्षिणाम् ६.५.१४

मनुष्य दक्षिणा में घर-बुना वस्त्र दे, सोना दे।

वासो हिरण्यं दत्त्वा ते यन्ति दिवमुत्तमाम् ६.५.२६

वस्त्र, हिरण्यादि का दान करने वाले उत्तम लोक पाते हैं।

ब्रह्मभ्यो विभजा वसु १४.१.२५

ब्राह्मणों को धन दान दे।

अयं देवानां न मिनाति भागम् १४.१.३३

यह गृहस्थी देवों का हिस्सा कभी न मारे।

रयिं धत्त दाशुषे मर्त्याय १८.३.४३

परोपकारी मनुष्यों को ही धन दान करो।

ऊर्णम्रदा पृथिवी दक्षिणावते १८.३.४६

दानी के लिये मातृभूमि मुलायम ऊन की तरह सुखदायक होती है।

ये पृणन्ति प्र च यच्छन्ति सर्वदा ते दुह्रते दक्षिणां सप्तमातरम् १८.४.२६

जो सदा दिल खोल कर दान करते हैं उनके लिये दक्षिणा कामधेनु सिद्ध होती है।

न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते २०.२१ १

दानियों की अपकीर्ति नहीं होती ।

शिशीहि राय आभर २०.५६.४

धनों का दान कर, भर २ कर दान कर ।

 

वेद त्वाहं निग्रीवन्तीं नितुदन्तीमराते ५.७.७

हे कंजूसी ! मैं तुझे जानता हूँ, तू विनाश करने वाली और व्यथा देने वाली है ।

मा मा वोचन्नराधस जनासः ५.११.८

ऐसा बनूं कि लोग मुझे कंजूस न कहें ।

दत्तान्मा यूषम् ६.१२३.४

मैं दान देना कभी न छोड़ूं ।

अपद्रान्त्वरातयः ६.१२६.३

कंजूसी के भाव मेरे पास से दूर भाग जायें ।

मान्त स्थु नो अरातयः १३.१.५८

हमारे अन्दर कंजूसी न हो ।

उत्तिष्ठाराते प्रपत मेह रंस्थाः १४.२.१६

हे कंजूसी ! उठ, भाग, हमारे पास मत रह ।

ससन्तु त्या अरातयो बोधन्तु शूर रातयः २०.७४.४

हमारे अन्दर कंजूसी के भाव सो जायें, दान-भाव जागृत हों ।

न पापत्वाय रासीय २०.८२.१

मैं पाप-कर्म के लिये कभी दान न दूँ ।

 

अतिथि-सत्कार

सर्वो वा एष जग्धपाप्मा यस्यान्नमश्नन्ति ६.६[२].८

उसके पाप धुल जाते हैं, अतिथि जिसका अन्न खाते हैं ।

इष्टं च वा एष पूर्तं च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ६.६[३].१

घर के इष्ट और पूर्त को खो देता है जो अतिथि से पहले खाता है ।

पयश्च वा एष रसं च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ६.६[३].२

घर के दूध और रस को खो देता है जो अतिथि से पहले खाता है।

ऊर्जां च वा एष स्फातिं च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ६.६[३].३

घर की बल-वृद्धि को खो देता है जो अतिथि से पहले खाता है।

प्रजां च वा एष पशूँश्च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ६.६[३].४

घर के प्रजा-पशुओं को खो देता है जो अतिथि से पहले खाता है।

कीर्तिं च वा एष यशश्च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ६.६[३].५

घर की कीर्ति और ख्याति को खो देता है जो अतिथि से पहले खाता है।

श्रियं च वा एष संविदं च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ६.६[३].६

घर की लक्ष्मी और विद्या को खो देता है जो अतिथि से पहले खाता है।

तस्मात् पूर्वो नाश्नीयात् ९.६[३].७

अतिथि से पहले कभी न खाये।

अशितावत्यतिथौ-अश्नीयात् ९.६[३].८

पहले अतिथि को खिला कर फिर स्वयं खाये।

गृहे वसतु नोऽतिथिः १०.६.४

हमारे घर में अतिथि आकर निवास करे।

 

अग्निहोत्र

इदं हविर्यातुधानान् नदी फेनमिवावहत् १.८.१

यह हवि रोग-कृमियों को बहा ले जाये, जैसे नदी फेन को।

सम्यञ्चो ऽग्निं सपर्यत ३.३०.६

सब मिल कर अग्निहोत्र किया करो।

त्व भिषग् भेषजस्यासि कर्ता ५.२६ १

हे अग्ने ! तू साक्षात् वैद्य है, जो हमारी दवा करता है।

हविष्मन्त मा वर्धय ज्येष्ठतातये ६.३६.१

अग्ने ! मुझ हविष्मान् को बढ़ा, जिससे मैं बड़ा बनूँ।

यस्य कृण्मो हविर्गृहे तमग्ने वर्धया त्वम् ६.५.३

हे यज्ञाग्नि ! जिसके घर हम अग्निहोत्र करें उसे तू समृद्ध कर।

त त्वा वयं जातवेदः समिद्धं प्रजावन्त उपसदेम सर्वे ७.७४.४

हे अग्ने ! हम सब परिवार के लोग तुझे प्रज्वलित कर अग्निहोत्र किया करें।

घृतेन त्वां मनुरद्या समिन्धे ७.८२.६

हे यज्ञाग्नि ! मैं विचारशील बन कर तुझे घृत से समिद्ध करता हूँ।

घृतं तुभ्य दुहतां गावो अग्ने ७.८२.६

हे यज्ञाग्ने ! तुझ में हवन करने के लिये गौएँ हमें घृत देती रहें।

सं माग्ने वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा ७.८९.२

अग्ने ! तू मुझे तेज, प्रजननशक्ति और दीर्घायु से समन्वित कर।

अग्नेर्होत्रेण प्रणुदे सपत्नान् ९.२.६

अग्निहोत्र से मैं रोगादि शत्रुओं को दूर करता हूँ।

समिद्धो अग्निः सुपुना पुनाति १२.२.११

प्रज्वलित यज्ञाग्नि अपनी पावकता से स्थान को पवित्र करती है।

एष देवो हन्ति रक्षांसि सर्वा १४.२.२४

यह अग्निदेव सब रोग-राक्षसों को मार देता है।

अद्धि त्वं देव मयता हवींषि १८.३.४२

हे अग्निदेव ! तू पवित्र हवियों का भक्षण कर।

वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम १९.५५.३

हम तुझे प्रज्वलित करके अपने शरीरों को पुष्ट करते रहें।



चतुर्थ अध्याय

उन्नति के पथ पर

उद्बोधन

उच्च तिष्ठ महते सौभगाय २.६.२

महान् सौभाग्य के लिये उच्च बन।

स्वे गये जागृह्यप्रयुच्छन् २.६.३

अपने घर में बिना प्रमाद के जागरूक रह।

दूष्या दूषिरसि २.११.१

हे नर! तू ऍ ह्रों का दूषक है।

हेत्या हेतिरसि, मेन्या मेनिरसि

तू शस्त्र का शस्त्र है, वज्र का वज्र है।

सूरिरसि वर्चोधा असि तनूपानोऽसि २.११.४

तू विद्वान् है, वर्चस्वी है, शरीर का राजा है।

शुक्रोऽसि भ्राजोऽसि २.११.५

तू शुद्ध है, भ्राजमान है।

स्वरसि ज्योतिरसि

तू आनन्दमय है, ज्योतिर्मय है।

आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम

श्रेष्ठों तक पहुँच, बराबर वालों से आगे बढ़।

त्वमेकवृषो भव ६.८६.१

तू सर्वश्रेष्ठ बन।

अग्ने शर्ध महते सौभगाय ७.७३.१०

हे वीर! उत्साह धारण कर, ऐश्वर्य तेरे पैर चूमेगा।

मा त्वा केचिद् वियमन् ७.११७.१

देख, तुझे कोई बन्धन में न डाल सके।

तव द्युम्नान्युत्तमानि सन्तु

ध्यान रख, तेरी कीर्तियां उत्तम हों।

उत्क्रामातः पुरुष मावपत्थाः ८.१.४

हे नर! ऊपर उठ, नीचे मत गिर।

उद्यानं ते पुरुष नावयानम् ८.१.६

ध्यान रख, तेरी उन्नति हो, अधोगति नहीं!

आरोह तमसो ज्योतिः ८.१.८

तमोग्राह से छूट कर ज्योति में प्रवेश कर।

मात्र तिष्ठः पराङ्मनाः ८.१.९
संसार में मुर्दादिल होकर मत रह।

तमो मोपगाः ८.२.१
हताश मत हो।

जीवतां ज्योतिरभ्येहि ८.२.२
जीवितों की ज्योति प्राप्त कर।

ज्योतिः शूर पुरस्कृधि ८.५.१७
हे शूर! ज्योति को अपना आदर्श बना।

इतो जयेतो विजय संजय जय ८.८.२४
यहां जय पा, वहां जय पा, जय ही जय पा।

उत्तिष्ठत संनह्यध्वम् ११.९.२
उठो, कमर कस लो।

वीरयध्वं प्रतरता सखायः १२.२.२६
मित्रो! उद्यम करो, पार हो जाओ।

उत्तिष्ठता प्रतरता सखायः १२.२.२७
उठो, मित्रो! पार हो जाओ।

तमो व्यस्य १२.३.१८

तमोगुण को अपने अन्दर से निकाल दे।

सर्वा अरातीरवक्रामन्नेहि १३.१.२०

सब शत्रुओं को पद्दलित करता हुआ आगे बढ़।

दिवं च रोह पृथिवीं च रोह १३.१.३४

पृथ्वी पर सबसे ऊँचा हो, आकाश में सबसे ऊँचा हो।

राष्ट्रं च रोह द्रविणं च रोह

राष्ट्र में सबसे ऊँचा हो, धन में सबसे ऊँचा हो।

रोहितेन तन्वं संस्पृशस्व

इतना उन्नत हो कि सूर्य को छू ले।

हित्वाशस्तिं दिवमारुक्ष एताम् १७.१.८

अपयश से छूट कर उन्नति की चोटी पर पहुँच जा।

उत्तिष्ठ प्रेहि प्रद्रव १८.३.८

उठ, आगे बढ़, तेज़ी से आगे बढ़।

आरोहत दिवमुत्तमामृषयो मा बिभीतन १८.३.६४

ऋषियो! सर्वोच्च शिखर पर चढ़ जाओ, भय मत करो।

इहैधि वीर्यवत्तरो वयोधा अपराहतः १८.४.३८

तू अतिवीर्यवान्, दीर्घायु और अजय्य होकर संसार में रह।

त्वमुत्तरोऽसः १६.४६.७

तू उच्च बन।

नहि त्वा कश्चन प्रति २०.६३.२

याद रख, संसार में कोई नहीं जो तेरी बराबरी कर सके।

शयो हत इव २०.१३१.१६

अरे, तू मृततुल्य होकर सोया पड़ा है!

 

राक्षस-संहार

वि रक्षो वि मृधो जहि १.२१.३

राक्षसों का संहार कर, हिंसक का संहार कर।

वि वृत्रस्य हनू रुज

शत्रु की दाढ़ तोड़ दे।

असमृद्धा अघायवः १.२७.३

देख, पापी लोग समृद्ध न हो पायें।

प्रतिदह यातुधानान् १.२८.२

राक्षसों को भस्म कर दे।

अभि पृतन्यन्तं तिष्ठाभि यो नो दुरस्यति १.२९.२

हमला करने वाले और दुष्टता करने वाले को कुचल दे।

अभिप्रेत मृणत सहध्वम् ३.१.२

आगे बढ़ो, शत्रु को मारो, परास्त कर दो।

प्रेता जयता नरः ३.१९.७

वीरो! आगे बढ़ो, विजय पाओ।

उग्रा वः सन्तु बाहवः

तुम्हारी भुजाओं में बल हो।

जह्येषां वरं वरं मामीषां मोचि कश्चन

चुन-चुन कर राक्षसों को मार दे, कोई बचने न पाये।

ओजो मिमानो वि मृधो नुदस्व ४.३१.२

अपने अन्दर ओज पैदा कर, हिंसकों को खदेड़ दे।

रुजन् मृणन् प्रमृणन् प्रेहि शत्रून् ४.३१.३

शत्रुओं को तोड़ता-फोड़ता, मारता-कुचलता हुआ आगे बढ़।

तपसा युजा विजहि शत्रून् ४.३२.३

तेजस्वी बन कर शत्रुओं का विनाश कर।

अविं वृक इव मथ्नीत ५.८.४

शत्रु को ऐसे दबोच लो जैसे भेड़िया भेड़ को।

स वो जीवन् मा मोचि

शत्रु जीवित छूट कर न भागने पाये।

सिंह इव जेष्यन्नभि संस्तनीहि ५.२०.१

विजय पाने के लिये सिंह की तरह गर्जना कर।

वृषा त्वं वध्रयस्ते सपत्नाः ५.२०.२

तू वीर है, सब शत्रु तेरे आगे निर्वीर्य हैं।

शुचा विध्य हृदयं परेषाम् ५.२०.३

शत्रुओं के हृदय को शोक-विद्ध कर दे।

हित्वा ग्रामान् प्रच्युता यन्तु शत्रवः

शत्रु गांव छोड़ कर भाग खड़े हों ।

धावन्तु बिभ्यतोऽमित्राः ५.२१.२

शत्रु डर कर भाग जायें ।

निर्हस्ताः सन्तु शत्रवः ६.६६.३

शत्रु निहत्थे हो जायें ।

पराङमित्र एषतु ६.६७.३

शत्रु पीठ दिखा कर भाग जाये ।

शत्रूयतोऽधरान् पादयस्व ६.८८.३

शत्रुता करने वाले नीचों को पाद-प्रहार से गिरा दे ।

दूराद् दवीयो अपसेध शत्रून् ६.१२६.१

शत्रुओं को दूर से दूर भगा दे ।

यो जिनाति तमन्विच्छ यो जिनाति तमिज्जहि ६.१३४.३

जो दूसरों के प्राण लेने वाला है उसे ढूंढ़ २ कर मार दे ।

शत्रूयतामभितिष्ठा महांसि ७.७३.१०

शत्रुओं के तेज को पैरों से कुचल दे ।

वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व ७.८४.३

शत्रुओं को मार भगा, हिंसकों को परे खदेड़ दे।

मा त्वा दभन् यातुधानाः ८.३.६

देख, राक्षस तुझे न दबा सकें।

पराशृणीहि तपसा यातुधानान् ८.३.१६

राक्षसों को तपा २ कर मार डाल।

परासुतृपः शोशुचतः शृणीहि

दूसरे के प्राणों से अपनी प्यास बुझाने वालों का वध कर दे।

सत्यं धूर्वन्तमचितं न्योष ८.३.२१

सत्य की हिंसा करने वाले दुश्चित्त राक्षस को दग्ध कर दे।

ग्रावाणो घ्नन्तु रक्षसः ८.४.१७

राक्षस पत्थरों की मार मार डाले जायें।

गृभायत रक्षसः सपिनष्टन ८.४.१८

पकड़ लो राक्षसों को, पीस डालो।

अभिजहि रक्षसः पर्वतेन ८.४.१६

राक्षसों को पहाड़ तले दबा कर मार डाल।

भञ्जन्नमित्राणां सेनां भोगेभिः परिवारय ११.६.५

शत्रु-दल का भंजन करता हुआ उसे पाशों से जकड़ ले।

भियाऽमित्रान् संसृज ११.९.१२

शत्रुओं को भयाक्रान्त कर दे।

मुह्यन्त्वेषां बाह्वश्चित्ताकूतं च यद्धृदि ११.६.१३

शत्रुओं की भुजायें बेकाम हो जायें, उनके सब मनसूबों पर पानी फिर जाये।

शौष्कास्यमनुवर्ततामित्रान् मोत मित्रिणः ११.६.२१

शत्रुओं का मुँह सूख कर आधा रह जाये, मित्र फूलें-फलें।

अमित्राननु धावत ११.१०.१

शत्रुओं पर टूट पड़ो।

जयाऽमित्रान् प्रपद्यस्व ११.१०.१८

शत्रुओं से जा भिड़, विजयी हो।

उद्यच्छध्वमप रक्षो हनाथ १४.१.५६

उठो, उद्यम करो, राक्षसों को मार भगाओ।

हृदः सपत्नानां भिन्धि १६.२८.३

शत्रुओं के हृदय चीर डाल।

व्याघ्रः शत्रूनभितिष्ठ सर्वान् १६.४६.५

बाघ बन कर शत्रुओं को परास्त कर।

यस्त्वा पृतन्यादधरः सो अस्तु

जो तुझ पर आक्रमण करे वह पद्दलित होकर रहे।

त्वं तूर्य तरुष्यतः २०.१०५.१

जो तेरी हिंसा करने आये उसे मार।

❋ ❋

कर्तव्य-प्रेरणा

त्वमगदश्चर ४.१७.८

तू नीरोग होकर विचर।

बद्धान्मुञ्चासि बद्धकम् ६.१२१.४

बंद्ध को बन्धन से मुक्त कर।

मा गतानामादीधीथाः ८.१.८

जो गुज़र चुके हैं उनके लिये शोक मत कर।

मा विदीध्यः ८.१.६

व्यर्थ की चिन्ता मत कर।

मैतं पन्थामनुगा भीम एष ८.१.१०

देख, इस रास्ते पर मत जा, यह बड़ा भयंकर है।

तम एतत् पुरुष मा प्रपत्थाः

हे पुरुष! तमोमार्ग पर पैर मत रख।

मा क्रुधः ११.२.२०

क्रोध मत कर।

शुद्धा भवत यज्ञियाः १२.२.२०

शुद्ध बनो, यज्ञार्ह बनो।

समाग्रभाय वसु भूरि पुष्टम् १८.२.६०

यथेष्ट धन-दौलत कमा।

स्वयशसो हि भूत १८.३.१६

यशस्वी बनो।

श्रेष्ठा भूयास्थ १८.४.८६

श्रेष्ठ बनो ।

माकीं ब्रह्मद्विषो वनः २०.२२.२

ब्रह्मद्वेषियों का संग मत कर ।

संगृभाय पुरू शतोभयां हस्त्या वसु २०.५६.४

दोनों हाथों से भर २ कर धनों का संग्रह कर ।

 

आत्म-विश्वास

चक्षुर्मन्त्रस्य दुर्हार्दः पृष्टीरपि शृणीमसि २.७.५

आंखों से सैन चलाने वाले दुष्ट-हृदयी की हड्डी-पसली तोड़ दूँगा ।

पाशे स बद्धो दुरिते नियुज्यतां यो अस्माकं मन इदं हिनस्ति २.१२.२

पाश-बद्ध होकर दुर्गति पायेगा जो मेरे मन की हिंसा करेगा ।

वृश्चामि तं कुलिशेनेव वृक्षं यो अस्माकं मन इदं हिनस्ति २.१२.३

कुल्हाड़े से वृक्ष की तरह काट दूँगा जो मेरे मन की हिंसा करेगा।

वृश्चामि शत्रूणां बाहून् ३.१९.२

वैरियों की भुजायें काट डालूँगा।

परेणैतु पथा वृकः परमेणोत तस्करः ४.३.२

खबरदार, भेड़िया मुझ से दूर रहे, चोर मुझ से दूर रहे।

अक्ष्यौ च ते मुखं च ते व्याघ्र जम्भयामसि ४.३.३

बाघ ! तेरी आंखें फोड़ देंगे, तेरा मुँह चीर डालेंगे।

यो अद्य स्तेन आयति स संपिष्टो अपायति ४.३.५

चोर हमारे पास आयेगा तो कुट-पिट कर लौटेगा।

अव बाधे द्विषन्तं देवपीयुम् ४.३५.७

देवघाती द्वेषी को धराशायी कर दूँगा।

क्रव्यादो अन्यान् दिप्सतः सर्वास्तान् सहसा सहे ४.३६.३

दूसरों की हिंसा करने वाले राक्षसों को बलपूर्वक दबा दूँगा।

सर्वान् दुरस्यतो हन्मि ४.३६.४

सब दुष्टता करने वालों को कुचल दूँगा।

तपनो अस्मि पिशाचानाम् ४.३६.६

मैं पिशाचों को तपा डालने वाला हूँ।

पिशाचास्तस्मान्नश्यन्ति यमहं ग्राममाविशे ४.३६.७

पिशाच वहां से भाग खड़े होते हैं जिस गांव में मैं पहुँच जाता हूँ।

मल्वो यो मह्यं क्रुध्यति स उ पाशान्न मुच्यते ४.३६.१०

जो मलिनचेता मुझ पर क्रोध दिखाता है वह मेरी पकड़ से नहीं छूट पाता।

तं प्रत्यस्यामि मृत्यवे ५.८.५

शत्रु को मौत के घाट उतार दूँगा।

अस्तृतो नामाहमयमस्मि ५.६.७

कोई मेरा बाल बांका नहीं कर सकता।

न मे दासो नार्यो महित्वा व्रतं मीमाय यदहं धरिष्ये ५.११.३

दस्यु, आर्य किसी की शक्ति नहीं कि मेरे व्रत को तुड़ा सके।

द्विषतां वर्च आददे ७.१३.२

शत्रुओं का तेज हर लूँगा।

अन्तर्हस्तं कृतं मम ७.५०.२

मेरे हाथ में कर्म है।

कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः ७.५०.८

मेरे दायें हाथ में कर्म है, बायें हाथ में विजय रखी है।

वि मृधो हन्मि रक्षसः ८.५.८

हिंसक राक्षसों की चटनी बना दूँगा।

स्वायसा असयः सन्ति नो गृहे १०.१.२०

सावधान! हमारे घरों में चमचमाती लोहे की तलवारें विद्यमान हैं।

पृथिव्यास्तं निर्भजामो योऽस्मान् द्वेष्टि १०.५.२५

धरती से उखाड़ फेकेंगे जो हमसे शत्रुता ठानेगा।

दिग्भ्यस्तं निर्भजामो योऽस्मान् द्वेष्टि १०.५.२८
किसी भी दिशा में नहीं रहने देंगे जो हम से शत्रुता ठानेगा।

इदमेनमधराञ्चं पादयामि १०.५.३६
शत्रु को सिर नीचे पैर ऊपर करके भूमि पर दे मारूँगा।

अधस्पदं द्विषतस्पादयामि ११.१.१२
शत्रुओं को पैरों तले रौंद दूँगा।

अमित्रान् हन्म्योजसा ११.१०.१३
बलपूर्वक शत्रुओं को मार गिराऊँगा।

अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम् १२.१.५४
मैं बलवान् हूँ, भूमि भर में उत्कृष्ट हूँ।

अभीषाडस्मि विश्वाषाड्
मैं प्रतिपक्षी को परास्त करने वाला हूँ, विश्व को परास्त कर सकता हूँ।

त्विषीमानस्मि जूतिमान् १२.१.५८
मैं दीप्तिमान् हूँ, वेगवान् हूँ।

अवान्यान् हन्मि दोधतः

मैं क्रोधी से क्रोधी शत्रुओं को मार गिराने वाला हूँ।

निरितो मृत्युं निर्ऋतिं निररातिमजामसि १२.२.३

मृत्यु को, आपत्ति को, शत्रु को हम मार भगायेंगे।

व्यृद्धयो या असमृद्धयो या अस्मिन् ता स्थाणा-
वधि सादयामि १४.२.४६

जो दरिद्रता और असमृद्धि है उसे पहाड़ से दे मारूँगा।

निर्द्विषन्तं दिवो निः पृथिव्या निरन्तरिक्षाद् भजाम १६.७.६

शत्रु को हम द्यौ, भूमि, अन्तरिक्ष सब स्थानों से निकाल बाहर करेंगे।

स नो यमः प्रतरं जीवसे धात् १८.३.६३

प्रभु ने हमें गौरव के साथ जीने के लिये पैदा किया है।

द्युमन्तं घोषं विजयाय कृण्मसि ४.३१.४

आओ, उच्च-स्वर से जयघोष करें।

अयुतोऽहमयुतो म आत्मा १६.५१.१

मैं अकेला दस हजार हूँ, मेरा आत्मा दस हजार के बराबर है।

अदूहमित्यां पूषकम् २०.१३१.१८

पूषा प्रभु से मैंने उद्यम करना सीखा है।

❀ ❀

महत्त्वाकांक्षा

सपत्ना अस्मदधरे भवन्तु १.६.२

शत्रु हम से पादाक्रान्त हो जायें।

मा नो विददभिभा मो अशस्तिः १.२०.१

हमें पराजय प्राप्त न हो, अपकीर्ति प्राप्त न हो।

अहं शत्रुहोऽसानि १.२९.५

मैं शत्रुहन्ता बनूँ।

अरातिर्नो मा तारीत् २.७.४

शत्रु हमें न दबा सके।

यः सुहार्त् तेन नः सह २.७.५

जो अच्छे हृदय वाला है उससे हमारा संग हो।

अहं राष्ट्रस्याभीवर्गे निजो भूयासमुत्तमः ३.५.२

मैं राष्ट्र को स्वतन्त्र कराने में सब से आगे होऊँ।

अहमुत्तरोऽसानि ३.५.५

मैं औरों से अधिक उच्च बनूँ।

इन्द्र इवारिष्टो अक्षतः ४.५.७

मैं इन्द्र की तरह अहिंसित और अक्षत बनूँ।

जागृतादहम्

मैं जागरूक रहूँ।

अहं भूयासमुत्तमः ६.१५.२

मैं उत्तम बनूँ।

भक्तिवांसः स्याम ६.७९.३

हम भक्तिमान् बनें।

यो नो द्वेष्टयधरः सस्पदीष्ट ७.३१.१

जो हमसे शत्रुता करता है वह अधोगति पाये।

मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रः ६.२.११

चारों दिशायें मेरे आगे झुक जायें।

श्रिया समानानति सर्वान् स्याम ११.१.१२

श्री में सब बराबर वालों से हम आगे बढ़ जायें।

अजीतोऽहतो अक्षतोऽध्यष्ठां पृथिवीमहम् १२.१.११

मैं अजित, अहत, अक्षत होता हुआ पृथ्वी का राजा बनूँ।

मा निपप्तं भुवने शिश्रियाणः १२.१.३१

भूतल पर रहता हुआ मैं पतित न होऊँ।

प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय १२.२.२२

हम नृत्य-गीत और हंसी-खुशी का जीवन व्यतीत करने के लिये आगे २ बढ़ते चलें।

न स्तेयमद्मि १४.१.५७

चोरी का माल न खाऊँ।

अपास्मात् तम उच्छतु १४.२.४८

तमोगुण हमसे दूर हो जाये।

मा वयं रिषाम १४.२.५०

हम किसी की हिंसा के शिकार न बनें।

मूर्धाहं रयीणाम् १६.३.१

मैं ऐश्वर्यों का शिरोमणि बनूँ।

मूर्धा समानानां भूयासम्

मैं अपने समकक्ष लोगों का शिरोमणि बनूँ।

नाभिरहं रयीणाम् १६.४.१

मैं धनों का केन्द्र बनूँ।

नाभिः समानानां भूयासम्

मैं सब समकक्ष लोगों का केन्द्र बनूँ।

पशवो मोपस्थेषुः १६.४.७

बहुत से पशु मेरे पास हों।

अहं पशूनामधिपा असानि १६.३१.६

मैं बहुत से पशुओं का स्वामी होऊँ।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकम् १६.८.१

हमें विजय प्राप्त हो, हमें अभ्युदय प्राप्त हो।

ऋतमस्माकं तेजोऽस्माकम्

हमें सत्य प्राप्त हो, हमें तेज प्राप्त हो।

ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकम्

हमें ब्रह्म प्राप्त हो, हमें आनन्द प्राप्त हो।

यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकम्

हमें यज्ञ प्राप्त हो, हमें पशु प्राप्त हों।

प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्

हमें प्रजा प्राप्त हो, वीर प्राप्त हों।

परीवृतो ब्रह्मणा वर्मणाहम् १७.१.२८

मैं ज्ञान के कवच से आच्छादित रहूँ।

वर्चो म इन्द्रो न्यनक्तु हस्तयोः १८.३.१२

इन्द्र मेरे हाथों में प्रताप ला देवे।

जीवा ज्योतिरशीमहि १८.३.६७

जीवित जागृत रहते हुए हम ज्योति को प्राप्त करें।

बृहद् वदेम विदथे सुवीराः १८.३.२४

हम वीर होकर निवेदन में महत्ता के वचन बोलें।

श्रेष्ठा भूयास्म १८.४.८७

हम श्रेष्ठ बनें।

योगं प्रपद्ये क्षेमं च क्षेमं प्रपद्ये योगं च १६.८.२
मैं योग-क्षेम प्राप्त करूँ।

मा मा प्रापत् प्रतीचिका १६.२०.४
मुझे प्रतिभय प्राप्त न हो।

आ देवानामपि पन्थामगन्म १६.५६.३
हम देवों के मार्ग पर चलें।

भद्रं भवाति नः पुरः २०.२०.६
सज्जनता हमारे आगे २ हो।

जयेम सं युधि स्पृधः २०.७०.१६
हम युद्ध में स्पर्धालु शत्रुओं पर विजय पा लें।

सासह्याम पृतन्यतः २०.७०.२०
सेना लेकर आ टूटने वालों को हम परास्त कर दें।

पश्चा मृधो अप भवन्तु विश्वाः २०.६१.११
सब हिंसक शत्रु हमसे पिछड़ जायें।

मा भूम निष्ट्या इव २०.११६.१
हम नीचवत् न हों।

न रिष्येम कदाचन २०.१२७.१४

हम कभी किसी से हिंसित न हों।

 

शुभ-कामना

शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् २.१०.१

तेरे लिये भूमि-आकाश सुखदायी हों।

शं ते भवन्तु प्रदिशश्चतस्रः २.१०.३

तेरे लिये चारों दिशायें सुखदायी हों।

कृण्वन्तु विश्वे देवा आयुष्टे शरदः शतम् २.१३.४

सब देव तेरी आयु सौ वर्ष की करें।

अनमीवो मोदिषीष्ठाः सुवर्चाः २.२६.६

प्रभु करे तू नीरोग और वर्चस्वी होता हुआ आनन्दित रहे।

शतं जीव शरदो वर्धमानः ३.११.४

तू निरन्तर फूलता-फलता हुआ सौ वर्ष जीवित रह।

अनक्तु पूषा पयसा घृतेन ५.२८.३

प्रभु तुझे दूध-घी से सींच दें।

अन्नस्य भूमा पुरुषस्य भूमा भूमा पशूनां त इह श्रयन्ताम्

बहुत सा अन्न, बहुत से परिजन, बहुत से पशु तुझे प्राप्त हों।

तुभ्यं वर्षन्त्वमृतान्यापः ८.१.५

तेरे सुख के लिये अमृत-वर्षायें होती रहें।

पूषा त्वा पातु प्रपथे पुरस्तात् १८.२.५५

प्रभु उन्नति के मार्ग में तेरा रक्षक हो।

सर्वा दिशो अभयास्ते भवन्तु १९.४५.४

तेरे लिये सब दिशायें भय-रहित हों।



पञ्चम अध्याय

शरीर-रक्षा

शक्ति-संचय

अश्मानं तन्वं कृधि १.२.२

शरीर को पत्थर सा दृढ़ बना।

अश्मा भवतु ते तनूः २.१३.४

तेरा शरीर पत्थर की तरह दृढ़ हो।

उदायुरुद् बलम् ५.६.८

आयु को बढ़ाओ, बल को बढ़ाओ।

उन्मनीषामुदिन्द्रियम्

बुद्धि को बढ़ाओ, इन्द्रिय-शक्ति को बढ़ाओ।

वातरंहा भव वाजिन् ६.९२.१

हे बली मनुष्य ! वायुवेग से चल।

इन्द्रस्य याहि प्रसवे मनोजवाः

मन के तुल्य वेगवान् होकर प्रभु की आज्ञा में चल।

आ ते त्वष्टा पत्सु जवं दधातु

विधाता तेरे पैरों में वेग ला दे।

मा त्वा प्राणो बलं हासीत् ८.१.१५

प्राण और बल तुझे न छोड़े।

मा ते हास्त तन्वः किंचनेह १८.२.२४

तेरे शरीर की कोई भी शक्ति क्षीण न हो।

तन्वा चारुरेधि १८.३.७

शरीर से सुन्दर रह।

तन्वं संभरस्व १८.३.६

शरीर को हृष्टपुष्ट बना।

मा ते गात्रा विहायि मो शरीरम्

तेरे अंग क्षीण न हों, तेरा शरीर क्षीण न हो।

❀ ❀

ओजोऽस्योजो मे दाः २.१७.१

प्रभो! तू ओजस्वी है, मुझे ओज दे।

सहोऽसि सहो मे दाः २.१७.२

प्रभो! तू साहसी है, मुझे साहस दे।

बलमसि बलं मे दाः २.१७.३

प्रभो ! तू बलवान् है, मुझे बल दे।

आयुरस्यायुर्मे दाः २.१७.४

प्रभो ! तू आयुष्मान् है, मुझे आयु दे।

श्रोत्रमसि श्रोत्रं मे दाः २.१७.५

प्रभो तू श्रवणशक्ति-सम्पन्न है, मुझे श्रवणशक्ति दे।

चक्षुरसि चक्षुर्मे दाः २.१७.६

प्रभो ! तू चक्षुष्मान् है, मुझे चक्षुःशक्ति दे।

शरीरे मांसमसुमेरयाथः ५.२६.५

शरीर को मांसल और प्राणवान् बनाते हैं।

पुनः प्राणः पुनरात्मा न ऐतु ६.५३.२

पुनः हमारे अन्दर प्राण-बल और आत्म-बल आये।

पुनश्चक्षुः पुनरसुर्न ऐतु

पुनः हमारे अन्दर नेत्रशक्ति और प्राणबल आये।

पुनर्मैत्विन्द्रियं पुनरात्मा द्रविणं ब्राह्मणं च ७.६७.१

पुनः मुझे इन्द्रिय-बल, आत्म-बल, धन और ब्राह्मणत्व प्राप्त हो।

मय्यग्रे अग्निं गृह्णामि सह क्षत्रेण वर्चसा बलेन ७.८२.२

मैं अपने अन्दर क्षात्र-तेज, ब्रह्मवर्चस्, बल और 'अग्नि' को धारण करता हूँ।

मयि प्रजां मय्यायुर्दधामि

मैं अपने अन्दर प्रजननशक्ति और दीर्घायुष्य को धारण करता हूँ।

सुवीर्यस्य पतयः स्याम ७.६१.२

हम श्रेष्ठ बल के अधिपति बनें।

विदेम सुमतिं स्वस्ति प्रजां चक्षुः पशून् १०.६.३५

हम सुमति, सुख, प्रजा, चक्षु और पशु प्राप्त करें।

श्रीर्मयि ११.७.३

मुझे श्री प्राप्त हो।

मे चक्षुर्मा मेष्टोत्तरामुत्तरां समाम् १२.१.३३

मेरी आंख की शक्ति उत्तरोत्तर वर्षों तक अक्षुण्ण बनी रहे।

सुश्रुतौ कर्णौ १६.२.४

मेरे कानों की श्रवणशक्ति बहुत तेज हो।

भद्रश्रुतौ कर्णौ
मेरे कान भद्र को सुनने वाले हों।

भद्रं श्लोकं श्रूयासम्
मैं भद्र वचनों का ही श्रवण करूँ।

सौपर्णं चक्षुः १६.२.५
मेरी आंख गरुड़ जैसी तीव्र-दृष्टि वाली हो।

अजस्रं ज्योतिः
मेरी नेत्र-ज्योति अजस्र रहे।

बृहस्पतिर्मे आत्मा १६.३.५
मेरा आत्मा बड़ा शक्तिशाली हो।

असन्तापं मे हृदयम् १६.३.५
मेरा हृदय सन्ताप-रहित हो।

समुद्रो अस्मि विधर्मणा
मैं गुणों का समुद्र हो जाऊँ।

सहस्रं प्राणा मय्यायतन्ताम् १७.१.३०
सहस्र प्राण-शक्तियां मेरे अन्दर आ बसें।

ऊर्जा बलं सह ओजो न आगन् १८.४.५३

प्राण, बल, साहस और ओज हमें प्राप्त हों।

वर्च आधेहि मे तन्वां सह ओजो वयो बलम् १९.३७.२

प्रभो ! मेरे शरीर में तेज, साहस, ओज, आयु और बल दे।

बलमिन्द्रो दधातु मे १९.४३.६

प्रभु मुझे बल दे।

श्रोत्रं चक्षुः प्राणोऽच्छिन्नो नो अस्तु १९.५८.१

हमारे श्रोत्र, चक्षु, प्राण अच्छिन्न रहें।

अच्छिन्ना वयमायुषो वर्चसः

हम आयुष्य और वर्चस् से छिन्न न हों।

वाङ् म आसन् १९.६०.१

मेरे मुख में वक्तृत्वशक्ति हो।

नसोः प्राणः

मेरी नासिका में प्राण-शक्ति हो।

चक्षुरक्ष्णोः

मेरे नेत्रों में दृष्टि-शक्ति हो।

श्रोत्रं कर्णयोः

मेरे कानों में श्रवणशक्ति हो।

अपलिताः केशा अशोणा दन्ताः

मेरे केश सफेद न हों, दांत न हिलें।

बहु बाह्वोर्बलम्

मेरी बाहुओं में बहुत बल हो।

ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जवः १९.६०.२

मेरे घुटनों में ओज हो, जंघाओं में वेग हो।

 

आरोग्य-कामना

परिवृङ्ग्धि तक्मन् १.२५.१

हे ज्वर! तू मेरा पीछा छोड़।

वि यक्ष्मेण समायुषा ३.३१.१

मैं रोगों से दूर रहूँ, आयु से संगत होऊँ।

निर्बलासेतः प्रपत ६.१४.३

हे श्लेष्म-रोग! तू हमारे शरीर से निकल जा।

मा च नः किंचनाममत् ६.५७.३

हमें कोई वस्तु रोगी न करे।

ग्राहिं पाप्मानमति ताँ अयाम १२.३.१८

रोगग्राह और पाप को हम दूर भगा दें।

 

जल से आरोग्य

अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजम् १.४.४

जल में अमृत है, जल में औषध है।

आप इद् वा उ भेषजीरापो अमीवचातनीः ३.७.५

जल बड़ी उत्तम दवा है, जल रोग-विनाशक है।

आपो विश्वस्य भेषजीः

जल सब रोगों की औषध है।

जालाषमुग्रं भेषजम् ६.५७.२

जल अचूक दवा है।

आपो अग्रं दिव्या ओषधयः ८.७.३

जल दिव्य औषधि है।

भिषग्भ्यो भिषक्तरा आपः १९.२.३

जल वैद्यों का वैद्य है।

इदमापः प्रवहतावद्यं च मलं च यत् ७.८९.३

हे जल! जो मेरे शरीर में दोष और मल है उसे बहा ले जा।

आपो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त १०.५.७

हे दिव्य जल! हमारे शरीरों में कान्ति भर दे।

अरिप्रा आपो अप रिप्रमस्मत् १०.५.२४

हे निर्मल जल! हमारे शरीर से मलों को दूर कर।

शुद्धा न आपस्तन्वे क्षरन्तु १२.१.३०

शुद्ध जल हमारे शरीर के लिये क्षरित होते रहें।

 

सूर्य से आरोग्य

उद्यन्नादित्यः क्रिमीन् हन्तु .३२.१

उदित होता हुआ सूर्य रोग-कृमियों को नष्ट करे।

उत् सूर्यो दिव एति पुरो रक्षांसि निजूर्वन् ६.५२.१

वह देखो, सामने आकाश में रोग-राक्षसों का संहारक सूर्य उदित हो रहा है।

वैश्वानरो रश्मिभिर्नः पुनातु ६.६२.१

सूर्य अपनी रश्मियों से हमें पवित्र करे।

सूर्यः कृणोतु भेषजम् ६.८३.१

सूर्य हमारी चिकित्सा करे।

उद्यन्नादित्य रश्मिभिः शीर्ष्णो रोगमनीनशः ६.८.२२

हे उदीयमान सूर्य ! तू अपनी किरणों से सिर के रोग को नष्ट कर।

उद्यंस्त्वं देव सूर्य सपत्नानव मे जहि १३.१.३२

हे सूर्य ! उदित होकर मेरे रोग-शत्रुओं को नष्ट कर।

तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य १३.२.१९

हे सूर्य ! तू रोग-तारक है, सब का दर्शनीय है, ज्योति देने वाला है।

सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च १३.२.३५

सूर्य स्थावर-जंगम सब का जीवन है।

स नः सूर्य प्रतिर दीर्घमायुः १३.२.३७

हे सूर्य ! हमारी आयु को लम्बा कर ।

उदिह्युदिहि सूर्य वच सा माभ्युदिहि १७.१.६

उदित हो, उदित हो, सूर्य ! तेज के साथ मेरे प्रति उदित हो ।

उदगादयमादित्यो विश्वेन तपसा सह १७.१.२४

यह देखो, अपने सम्पूर्ण तेजोमण्डल के साथ सूर्य उदित हुआ है ।

उद्यन्त्सूर्यो नुदतां मृत्युपाशान् १७.१.३०

उदित होता हुआ सूर्य मेरे मृत्यु-पाशों को काट दे ।

चक्षुः सूर्यो दधातु मे १६.४३.३

सूर्य मुझे नेत्र दे ।

 

वायु से आरोग्य

आ वात वाहि भेषजम् ४.१३.३

हे वायु ! हमारे अन्दर औषध पहुँचा ।

वि वात वाहि यद् रपः

हे वायु ! जो हमारे अन्दर दोष है उसे निकाल दे।

त्वं हि विश्वभेषज देवानां दूत ईयसे

हे वायु ! तू सब रोगों का औषध होता हुआ देव-दूत होकर विचर रहा है।

वायुः प्राणान् दधातु मे १६.४३.२

वायु मुझे प्राण-शक्ति दे।

 

वनस्पतियों से आरोग्य

शं नो देवी पृश्निपर्णी २.२५.१

पृश्निपर्णी हमारी व्याधि को शान्त करे।

रोहण्यसि रोहणि ! अस्थ्नश्छिन्नस्य रोहणी ४.१२.१

हे रोहणि ! तू हड्डी को जोड़ देने वाली है, कटे को जोड़ देने वाली है।

रोहयेदमरुन्धति ४.१२.१

हे घाव को भरने वाली ! मेरे घाव को भर।

छिन्नं सन्धेह्योषधे ४.१२.५

हे ओषधि ! कटे को जोड़।

अजशृङ्ग्यज रक्षः ४.३७.२

हे अजशृङ्गि ! रोग-राक्षसों को दूर कर।

ता नः पयस्वतीः शिवा ओषधीः सन्तु शं हृदे ८.७.१७

ये रसीली-रसीली ओषधियां हमारे हृदय को शान्त-स्वस्थ करें।

 

रोगकृमि-नाश

उद्यन्नादित्यः क्रिमीन् हन्तु निम्रोचन् हन्तु रश्मिभिः २.३२.१

उदित और अस्त होता हुआ सूर्य किरणों से रोग-कृमियों को नष्ट करे।

अस्येन्द्र कुमारस्य क्रिमीन् धनपते जहि ५.२३.२

हे सूर्य ! इस बालक में प्रविष्ट रोग-कीटाणुओं को नष्ट कर।

ये के च विश्वरूपास्तान् क्रिमीन् जम्भयामसि ५.२३.५

जो भी अनेक प्रकार के रोगकृमि हैं उन्हें हम नष्ट कर दें।

दृष्टश्च हन्यतां क्रिमिरुतादृष्टश्च हन्यताम् ५.२३.७

दृष्टिगम्य और अदृष्टिगम्य सब रोगकृमि नष्ट कर दिये जायें।

हतो राजा क्रिमीणाम् ५.२३.११

रोगकृमियों के राजा को मार डाला जाये।

 

रोगी को आश्वासन

प्रत्यक् सेवस्व भेषजं जरदष्टिं कृणोमि त्वा ५.३०.५

औषध का सेवन कर, तुझे चिरञ्जीव कर दूँगा।

मा बिभेर्न मरिष्यसि ५.३०.८

हे रोगी! भय मत कर, मरेगा नहीं।

ऐतु प्राण ऐतु मन ऐतु चक्षुरथो बलम् ५.३०.१३

तुझ में प्राण आये, मन आये, दृष्टि आये, बल आये।

न्यग् भवतु ते रपः ६.६१.२

तेरा रोग नीचे जा पड़े।

आ ते प्राणं सुवामसि ७.५३.६

अभी तेरे अन्दर प्राण संचरित कर दूँगा।

परा यक्ष्मं सुवामि ते

अभी तेरे रोग को विदा कर दूँगा।

मा च्छित्था अस्माल्लोकात् ८.१.४

देखना, इहलोक से कूच न कर जाना।

मा त्वा क्रव्यादभिमंस्त ८.१.१२

देख, कोई मांसभक्षी रोगकृमि तुझे न आ दबोचे।

अप त्वन्मृत्युं निर्ऋतिमप यक्ष्मं निदध्मसि ८.१.२१

मृत्यु को कष्ट को, रोग को मैं अभी तुझ से विदा कर दूँगा।

असुं त आयुः पुनराभरामि ८.२.१

तेरे गये हुए प्राण और आयु को मैं पुनः तुझ में लौटा लाऊँगा।

द्राघीय आयुः प्रतरं ते दधामि ८.२.२

तेरी आयु लम्बी से लम्बी कर दूँगा।

वैवस्वतेन प्रहितान् यमदूतांश्चरतो ऽपसेधामि सर्वान् ८.२.११

मौत के भेजे हुए सब यमदूतों को अभी मैं तेरे पास से दूर भगा दूँगा।

मा ते हासिषुरसवः शरीरम् ८.२.२६

प्राण तेरे शरीर को न छोड़ें।

वर्षाणि तुभ्यं स्योनानि ८.२.२२

तेरी आयु के वर्ष सुख से कटें।

न मरिष्यसि न मरिष्यसि, मा बिभेः ८.२.२४

नहीं मरेगा, नहीं मरेगा, घबरा मत।

यक्ष्मं ते अन्तरङ्गेभ्यो बहिर्निमन्त्रयामहे ६.८.७

तेरे अंग-अंग से मैं रोग को निकाल दूँगा।

 

दीर्घायुष्य

शतं च जीव शरदः पुरूची रायश्च पोषमुपसंव्ययस्व २.१३.३

हे नर ! लम्बे-लम्बे सौ वर्षों तक जीवित रह और
यथेच्छ ऐश्वर्य प्राप्त कर ।

कृण्वन्तु विश्वे देवा आयुष्टे शरदः शतम् २.१३.४
सब देवता तेरी आयु सौ वर्ष की करें ।

त्वं जीव शरदः सुवर्चाः २.२६.७
तू वर्चस्वी होता हुआ वर्षों जीवित रह ।

मा पुरा जरसो मृथाः ५.३०.१७
पूरी आयु बिना भोगे मत मर ।

मृत्योः पड्वीशमवमुञ्चमानः ८.१.४
मौत की बेड़ी को काट डाल ।

अच्छिद्यमाना जरदष्टिरस्तु ते ८.२.१
तुझे अटूट चिरञ्जीविता प्राप्त हो ।

अमम्रिर्भव-अमृतः ८.२ २६
हे नर ! मर मत, अमर हो जा ।

मृत्योः पदं योपयन्त एत १२.२.३०
मृत्यु के पैर को धक्का देकर आगे बढ़ जाओ ।

परं मृत्यो अनुपरेहि पन्थाम् १२.२.२१

मौत ! दूर हट, दूसरा रास्ता पकड़ ।

शतं जीवन्तः शरदः पुरूचीस्तिरो मृत्युं दधतां पर्वतेन १२.२.२३

सब लोग लम्बे-लम्बे सौ वर्ष जियें, मौत को पहाड़ की ओट कर दें ।

आरोहतायु जरसं वृणानाः १२.२.२४

हे मनुष्यो ! आयु की सीढ़ी पर बहुत ऊँचे चढ़ जाओ ।

यथा न पूर्वमपरो जहात्येवा धातरायूंषि कल्पयैषाम् १२.२.२५

हे विधाता ! लोगों की आयु ऐसी कर कि पुत्र पिता से पहले न मरे ।

इमा नारीरविधवाः १२.२.३१

ये नारियां विधवा न हों ।

ग्राह्या गृहाः संसृज्यन्ते स्त्रिया यन्म्रियते पतिः १२.२.३६

स्त्री का पति मर जाये तो घर विपत्ति के शिकार हो जाते हैं ।

आयुष्मान् जीव मा मृथाः १९.२७.८

हे नर ! तू आयुष्मान् हो, जीवित रह, मर मत ।

मा मृत्योरुद्गा वशम्

मृत्यु के वश में मत आ ।

 

प्राणापानौ मृत्योर्मा पातम् २.१६.१

हे प्राण-अपान ! मृत्यु से मुझे बचाओ ।

शतं जीवेम शरदः सर्ववीराः ३.१२.६

सब वीर परिजनों सहित हम सौ वर्ष जीवें ।

उदायुषा समायुषा ३.३१.१०

मैं दीर्घायु बनूँ, मैं आयु से संगत होऊँ ।

ज्योक् पश्येम सूर्यमुच्चरन्तम् ६.६२.३

हम दीर्घकाल तक सूर्योदय का दर्शन करते रहें ।

प्रत्यौहतामश्विना मृत्युमस्मत् ७.५३.१

अश्वी देव मृत्यु को हमारे पास से दूर भगा दें ।

आयुर्नो विश्वतो दधदयमग्निर्वरेण्यः ७.५३.६

यह श्रेष्ठ अग्नि हमें आयु प्रदान करे ।

दीर्घं न आयुः १२.१.६२

हमारी आयु लम्बी हो।

मा जने प्र मेषि १६.४.५

जन-समाज में रहता हुआ मैं मृत्यु का ग्रास न होऊँ।

आयुष्मान् भूयासम् १७.१.१

मैं आयुष्मान् बनूँ।

सहस्रायुः सुकृतश्चरेयम् १७.१.२७

मैं अच्छे २ कर्म करता हुआ हजार वर्ष की आयु पाऊँ।

जरदष्टिं मा सविता कृणोतु १८.३.१२

प्रभु मुझे दीर्घजीवी करे।

परैतु मृत्युरमृतं न ऐतु १८.३.६२

मृत्यु दूर हो जाये, अमृतत्व हमें प्राप्त हो।

सर्वमायुरशीय १६.६१.१

मैं पूरी आयु भोगूँ।

आयुरस्मासु धेहि १६.६४.४

हे प्रभो! हमें आयुष्य प्रदान कर।

पश्येम शरदः शतम् १६.६७.१
सौ वर्ष तक हम आंखों से देखते रहें।

जीवेम शरदः शतम् १६.६७.२
सौ वर्ष तक हम जीवित रहें।

बुध्येम शरदः शतम् १६.६७.३
सौ वर्ष तक हम जागृत रहें।

रोहेम शरदः शतम् १६.६७.४
सौ वर्ष तक हम उन्नति करते रहें।

पूषेम शरदः शतम् १६.६७.५
सौ वर्ष तक हम हृष्ट-पुष्ट बने रहें।

भवेम शरदः शतम् १६.६७.६
सौ वर्षों तक हमारा अस्तित्व बना रहे।

भूयेम शरदः शतम् १६.६७.७
हमें सौ वर्ष जीने का आशीर्वाद प्राप्त हो

भूयसीः शरदः शतात् १६.६७.८
हम सौ वर्षों से भी अधिक जियें।

जीव्यासमहं, सर्वमायुर्जीव्यासम् १६.७०.१

मैं जीवित रहूँ, पूरी आयु जीवित रहूँ।

उपजीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् १६.६६.२

मैं अधिकाधिक जिऊँ, पूरी आयु जिऊँ।

सं जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् १६.६६.३

मैं अच्छी प्रकार से जिऊँ, पूरी आयु जिऊँ।

विश्वायुर्धेह्यक्षितम् २०.७१.१३

हे प्रभो ! हमें क्षयरहित पूर्णायु प्राप्त करा।



षष्ठ अध्याय

विविध विषयों पर

मातृभूमि

माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः १२.१.१२

भूमि मेरी माता है, मैं उसका पुत्र हूँ।

पृथिव्या अकरं नमः १२.१.२६

मातृभूमि को नमस्कार; वन्दे मातरम्।

सा नो भूमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु १२.१.४

मातृभूमि हमें बहुत सी गौएँ और अन्न दे।

भगं वर्चः पृथिवी नो दधातु १२.१.५

मातृभूमि हमें ऐश्वर्य और तेज प्रदान करे।

सा नो मधु प्रियं दुहाम् १२.१.७

वह हमारे लिये मधुर प्रिय वस्तुओं की कामधेनु हो।

सा नो भूमिस्त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे १२.१.८

मातृभूमि राष्ट्र में कान्ति और बल भर देवे।

सा नो भूमिर्भूरिधारा पयो दुहाम् १२.१.६

मातृभूमि हमें भूरि-भूरि धाराओं में दुग्ध-पान कराये।

सा नो भूमिर्विसृजतां माता पुत्राय मे पयः १२.१.१०

माता भूमि मुझ पुत्र को अपना पयःपान कराये।

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोऽरण्यं ते पृथिवि स्योनमस्तु १२.१.११

हे मातृभूमि ! तेरी पहाड़ियां, तेरे हिमधवल पर्वत, तेरे वन-उपवन हमारे लिये सुखमय हों।

सा नो भूमिर्वर्धयद् वर्धमाना १२.१.१३

हमारी मातृभूमि उन्नति के शिखर पर आसीन हो और हमें भी उन्नत करे।

वाचो मधु पृथिवि धेहि मह्यम् १२.१.१६

हे मातृभूमि मुझे वाणी का माधुर्य प्रदान कर।

शिवां स्यानोमनुचरेम विश्वहा १२.१.१७

हम अपनी मंगलमयी, सुखकरी मातृभूमि के सदा सेवक बनें।

सा नो भूमे प्ररोचय हिरण्यस्येव संदृशि १२.१.१८

हे मातृभूमि ! तू हमें सोने सा चमका दे।

सा नो भूमिः प्राणमायुर्दधातु १२.१.२२

मातृभूमि मुझे प्राण और आयुष्य प्राप्त कराये।

जरदष्टिं मा पृथिवी कृणोतु

मातृभूमि मुझे दीर्घजीवी करे।

पृथिवीं विश्वधायसं धृतामच्छा वदामसि १२.१.२७

हम अपनी स्थिर विश्वधाया मातृभूमि का सदा गुणगान किया करें।

मा व्यथिष्महि भूम्याम् १२.१.२८

मातृभूमि में रहते हुए हम दुःख न पायें।

ऊर्जं पुष्टं बिभ्रतीमन्नभागं घृतं त्वाभिनिषीदेम भूमे १२.१.२९

हे मातृभूमि ! बल, पुष्टि, अन्न, घृत से भरी हुई तुझ मां की गोदी में हम बैठें।

मा नः पश्चान्मा पुरस्तान्नुदिष्ठा मोत्तरादधरादुत १२.१.३२

हे मातृभूमि ! पश्चिम, पूर्व, उत्तर, दक्षिण किसी भी दिशा में हमें अपनी गोद से धक्का मत दे।

स्वस्ति भूमे नो भव

हे मातृभूमि ! तू हमारे लिये मंगलमयी हो।

मा ते हृदयमर्पिपम् १२.१.३५

मैं तेरे हृदय को न दुखाऊँ।

सा नो भूमिरादिशतु यद्धनं कामयामहे १२.१.४०

जो धन हम चाहें, मातृभूमि हमें प्राप्त कराये।

सा नो भूमिः प्रणुदतां सपत्नान् १२.१.४१

हमारी मातृभूमि शत्रुओं को दूर भगा दे।

असपत्नं मा पृथिवी कृणोतु

मातृभूमि मुझे शत्रु-रहित कर दे।

मणिं हिरण्यं पृथिवी ददातु मे १२.१.४४

मातृभूमि मुझे मणि-मुक्ता, हिरण्यादि देवे।

सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहाम् १२.१.४५

मातृभूमि मेरे लिये धन की सहस्र धारायें दुह देवे।

पिशाचान्त्सर्वा रक्षांसि तानस्मद् भूमे यावय १२.१.५०

सब पिशाच राक्षसों को हे मातृभूमि! हमसे दूर कर।

चारु वदेम ते १२.१.५६

हम तेरा यशोगान करते रहें।

वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम १२.१.६२

हम तेरे लिये बलिदान करने को तैयार रहें।

श्रियां मा धेहि भूत्याम् १२.१.६३

हे मातृभूमि ! मुझे श्री और समृद्धि की गंगा में नहला दे।

 

राजा के प्रति

वर्ष्म क्षत्राणामयमस्तु राजा ४.२२.२

यह राजा क्षात्र-बल का भण्डार हो।

अयं विशां विश्पतिरस्तु राजा ४.२२.३

यह राजा प्रजापालक बने।

अयं राजा प्रिय इन्द्रस्य भूयात् ४.२२.४

यह राजा का प्यारा हो।

इन्द्रो जयाति न पराजयातै ६.९८.१

हमारा राजा विजयी हो, किसी से परास्त न हो।

इतश्च यदमुतश्च यद् वधं वरुण यावय १.२०.३

इधर-उधर होने वाली मार-काट को हे राजन्! रोक।

आ त्वा गन् राष्ट्रं सह वर्चसोदिहि ३.४.१

तुझे यह राज्य मिला है, अपने प्रताप के साथ ऊँचा उठ।

सर्वास्त्वा राजन् प्रदिशो ह्वयन्तु

राजन्! सब दिशायें तेरा स्वागत करें।

त्वां विशो वृणतां राज्याय ३.४.२

प्रजा तुझे राज्य करने के लिये चुने।

विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु ४.८.४

सब प्रजायें तुझे चाहती रहें।

उत्तरस्त्वमधरे ते सपत्नाः ४.२२.६

राजन्! ऊँचा हो, तेरे शत्रु नीचे हो जायें।

सिंहप्रतीको विशो अद्धि सर्वाः ४.२२.७

शेर बन कर शत्रुओं को हड़प जा।

व्याघ्रप्रतीकोऽवबाधस्व शत्रून्

बाघ बन कर शत्रुओं पर आक्रमण कर।

विशं विशं युद्धाय संशिशाधि ४.३१.४

एक-एक प्रजा को सैनिक शिक्षा दे।

इह राष्ट्रमु धारय ६.८७.२

इस राजसिंहासन पर बैठ कर तू राष्ट्र का धारण कर।

ध्रुवोऽच्युतः प्रमृणीहि शत्रून् ६.८८.३

स्वयं अविचल और अजय्य होता हुआ तू शत्रुओं का विध्वंस कर।

आयुष्मत् क्षत्रमजरं ते अस्तु ६.६८.२

तेरा क्षात्रबल चिरञ्जीवी और अकुण्ठित रहे।

विद्धि पूर्तस्य नो राजन् ६.१२३.५

राजन्! हम प्रजाओं की क्षतिपूर्ति करना जान।

इदं राष्ट्रं पिपृहि सौभगाय ७.३५.१

इस राष्ट्र को पाल-पोस, जिससे यह समृद्धिशाली बने।

अग्ने त्वचं यातुधानस्य भिन्धि ८.३.४.

हे नायक! राक्षस की चमड़ी उधेड़ दे।

त्वं नो अग्ने अधरादुदक्तस्त्वं पश्चादुत रक्षा पुरस्तात् ८.३.१६

हे अग्रनायक ! दक्षिण, उत्तर, पूर्व, पश्चिम सब ओर से तू हमारी रक्षा कर।

इदं राष्ट्रमकरः सूनृतावत् १३.१.२०

अपने राष्ट्र को सत्यभाषी और प्रियभाषी बना।

सोऽरज्यत ततो राजन्योऽजायत १५.८.१

राजा प्रजा का रञ्जन करता है, इसी से वह 'राजा' कहलाया है।

तं सभा च समितिश्च सेना च सुरा चानुव्य-चलन् १५.९.२

जो सच्चा राजा है उसका सभा, समिति, सेना और लक्ष्मी साथ देते हैं।

राज्ञे हविर्जुहोतन १८.२.३.

राजा को कर दो।

इमा विशो अभिहरन्तु ते बलिम् १९.४५.४

राजन् ! प्रजाय तुझे कर प्रदान करती रहें।

ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतये २०.४५.३

हे राजन् ! हमारी रक्षा के लिये सदा चौकन्ना रह।

 

ब्राह्मण का आदर

मा ब्राह्मणस्य राजन्य गां जिघत्सो अनाद्याम् ५.१८.१

हे राजन् ! ब्राह्मण-वाणी का अनादर मत कर, वह अनादर की वस्तु नहीं है।

न ब्राह्मणो हिंसितव्यः ५.१८.६

ब्राह्मण की हिंसा कभी मत करना।

परा तत् सिच्यते राष्ट्रं ब्राह्मणो यत्र जीयते ५.१९.६

वह राष्ट्र खोखला हो जाता है जहां ब्राह्मण का पराजय होता है।

ब्राह्मणं यत्र हिंसन्ति तद् राष्ट्रं हन्ति दुच्छुना ५.१९.८

जहां ब्राह्मण की उपेक्षा होती है वह राष्ट्र दुःखों का शिकार हो जाता है।

न ब्राह्मणस्य गां जग्ध्वा राष्ट्रे जागार कश्चन ५.१९.१०

ब्राह्मण-वाणी का तिरस्कार करके राष्ट्रों में कभी कोई अमन-चैन से नहीं रहा।

न वर्षं मैत्रावरुणं ब्रह्मज्यमभिवर्षति ५.१९.१५

ब्राह्मणघाती राजा के राज्य में वर्षा नहीं होती।

ब्राह्मणानां गौर्दुराधर्षा विजानता १२.५.१७

समझदार को ब्राह्मण-वाणी का कभी तिरस्कार नहीं करना चाहिये।

ब्राह्मणेभ्य इदं नमः ६.१३.३

ब्राह्मणों को नमस्कार हो।

 

वर्षा

वा आ आपः पृथिवीं तर्पयन्तु ४.१५.१

रिमझिम करती हुई वर्षा की बूँदें भूमि को तृप्त करें।

वर्षस्य सर्गा महयन्तु भूमिम् ४.१५.२

वर्षा की धारें भूमि को लहलहा दें।

भूमिं पर्जन्य पयसा समङ्ग्धि ४.१५.६

हे पर्जन्य ! भूमि को जल से सींच दे।

मरुद्भिः प्रच्युता मेघा वर्षन्तु पृथिवीमनु

वायु से संचालित बादल पृथ्वी पर खूब बरसें।

आनन्दिनीरोषधयो भवन्तु

वनस्पतियां आनन्द से लहलहा उठें।

 

कृषि

कृते योनौ वपतेह बीजम् ३.१७.२

भूमि तैयार करके उसमें बीज वपन करो।

विराजः श्नुष्टिः सभरा असन्नः

अन्न की बाली दानों से भरी हुई पैदा हो।

सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् ३.१७.४

भूमि जल-सिक्त होकर वर्षों तक हमें प्रचुर अन्न देती रहे।

शुनं कीनाशा अनुयन्तु वाहान् ३.१७.५

किसान बैलों को सुखपूर्वक हांकें।

अस्माकेदं धान्यं सहस्रधारमक्षितम् ३.२४.४

सहस्र धारों में धान उपजे, कभी समाप्त न हो।

उच्छ्रयस्व बहुर्भव स्वेन महसा यव ६.१४२.१

हे यव ! बढ़ कर ऊँचा २ हो जा, बहुत पैदा हो।

अक्षिताः सन्तु राशयः ६.१४२.३

अक्षय अन्न-राशियां पैदा हों।

मा नो वधीर्विद्युता देव सस्यम् ७.११,१

हे देव ! बिजली से हमारी फसल को मत मार।

कृषिं च सस्यं च मनुष्या उपजीवन्ति ८.१०[४].१२

खेती और अन्न के सहारे ही मनुष्य जीवित हैं।

 

गो-पालन

ध्रुवा गावो मयि गोपतौ २.२६.४

मुझ गोपालक के पास गौएँ स्थिर रहें।

संसिञ्चामि गवां क्षीरम्

गौओं के दूध से शरीर को सींचता रहूँ।

आ हरामि गवां क्षीरम् २.२६.५

घर में गौओं का दूध लाता हूँ।

शिवो वो गोष्ठो भवतु ३.१४.५

गौओ ! यह गो-गृह तुम्हें सुखदायी हो।

मया गावो गोपतिना सचध्वम् ३.१४.६

हे गौओ ! सदा ही तुम मुझ गोपालक के पास बनी रहो।

आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन् ४.२१.१

गौएँ हमारे घरों में आई हैं, हमें सुख दिया है।

गावो भगो गाव इन्द्रो म इच्छाद् ४.२१.५

गौएँ ऐश्वर्य हैं, प्रभु मुझे गौएँ दे।

यूयं गावो मेदयथा कृशं चिद् ४.२१.६

हे गौओ ! तुम दुर्बल को भी हृष्ट-पुष्ट कर देती हो।

भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचः

हे गौओ ! तुम घर को सुखी कर देती हो।

गावो घृतस्य मातरः ६.६.३

गौएँ घृत की जननी हैं।

गोभिष्टरेमामतिं दुरेवाम् ७.५०.७

गोदुग्ध के सेवन से हम दुर्मति को दूर कर दें।

वीतं पातं पयस उस्रियायाः ७.७३.५

गाय के दूध का खान-पान किया करो।

उपह्वये सुदुघां धेनुमेताम् ७.७३.७

मैं प्रचुर दूध देने वाली गौ को पुकारता हूँ।

अद्धि तृणमघ्न्ये विश्वदानी पिब शुद्धमुदकमा-चरन्ती ७.७३.११

हे गौ! शुद्ध घास खा और विचरती हुई सदा शुद्ध पानी पी।

घृतेनास्मान् समुक्षत ७.७५.२

गौओ! हमें घृत से सींच दो।

एतद् वै विश्वरूपं सर्वरूपं गोरूपम् ९.७.२५

यही सब धनों में श्रेष्ठ धन है जो कि गो-धन है।

बालेभ्यः शफेभ्यो रूपायाघ्न्ये ते नमः १०.१०.१

तेरे बालों के लिये, खुरों के लिये, रूप के लिये हे गौ! हम नत-मस्तक हैं।

वशां देवा उपजीवन्ति वशां मनुष्या उत १०.१०.३४

देव और मनुष्य दोनों गौ के सहारे जीते हैं।

यो अस्याः कर्णावास्कुनोत्या स देवेषु वृश्चते १२.४.६

जो गाय के कान भी ऐंठता है वह देवों के प्रति बड़ा भारी अपराध करता है।

वशा माता राजन्यस्य १२.४.३३

गौ क्षत्रियों की माता है।

गोभ्यो नः शर्म यच्छ १६.४७.६

हमारी गौओं को सुख दे।

नेमा इन्द्र गावो रिषन् २०.१२७.१३

राजन्! देख, ये गौएँ किसी से सताई न जायें।

 

भोजन

शिवं मह्यं मधुमदस्त्वन्नम् ६.७१.३

मुझे मधुर और स्वास्थ्यप्रद अन्न प्राप्त हो।

यदश्नामि बलं कुर्वे ६.१३५.२

जो वस्तु खाऊँ उससे अपने अन्दर बल पैदा करूँ।

यत् पिबामि संपिबामि ६.१३५.२

जो वस्तु पिऊँ, सम्यक् प्रकार पिऊँ।

यद् गिरामि संगिरामि ६.१३५.३

जो वस्तु निगलूँ, सम्यक् प्रकार निगलूँ।

व्रीहिमत्तं यवमत्तमथो माषमथो तिलम् ६.१४०.२

हे दांतो ! चावल खाओ, जौ खाओ, उड़द खाओ, तिल खाओ।

मा हिंसिष्टं पितरं मातरं च

हे दांतो ! नर-मादा जन्तुओं को मत खाओ।

न द्विषन्नश्नीयान्न द्विषतोऽन्नमश्नीयात् ६.६.२४

द्वेष रखता हुआ अन्न न खाये, द्वेषी दाता का अन्न न खाये।

 

प्राण-महिमा

प्राणाय नमो यस्य सर्वमिदं वशे ११.४.१

प्राण को नमस्कार है, जिसके वश में सारा जगत् है।

प्राणः प्रजा अनुवस्ते पिता पुत्रमिव प्रियम् ११.४.१०

प्राण सब प्रजाओं का पालन करता है, जैसे पिता प्यारे पुत्र का।

प्राणं देवा उपासते ११.४.११

देवता भी प्राण की उपासना करते हैं।

प्राणो विराट् ११.४.१२

प्राण एक बड़ी भारी शक्ति है।

प्राणं सर्व उपासते ११.४.१२

प्राण की सब उपासना करते हैं।

प्राणे सर्वं प्रतिष्ठितम् ११.४.१५

सभी प्राण के आश्रित हैं।

ऊर्ध्वः सुप्तेषु जागार ११.४.२५

मनुष्य सो जाते हैं तो भी उनमें प्राण जागता रहता है।

न सुप्तमस्य सुप्तेष्वनु शुश्राव कश्चन

प्राणियों के सोने पर उनका प्राण भी सोया हो ऐसा आज तक किसी ने नहीं सुना।

प्राण मा मत् पर्यावृतः ११.४.२६

हे प्राण ! तू मुझसे पृथक् मत हो ।

प्राण बध्नामि त्वा मयि

हे प्राण ! तुझे मैं अपने अन्दर बद्ध कर लेता हूँ ।

उप वयं प्राणं हवामहे १६.५८.२

हम प्राण को अपने समीप पुकारते हैं ।

 

जीवात्मा

अपश्यं गोपामनिपद्यमानम् ६.१०.११

मैंने देख लिया है कि आत्मा अमर है ।

जीवो मृतस्य चरति स्वधाभिरमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः ६.१०.८

मृत व्यक्ति का आत्मा जो कि अमर है भोगेच्छा को लेकर बार २ मर्त्य शरीर में आता है ।

अपाङ् प्राङेति स्वधया गृभीतोऽमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः ६.१०.१६

आत्मा जो कि अमर है भोगेच्छा से पकड़ा हुआ ऊँची-नीची योनियों में जन्म लेता है।

त्वं स्त्री त्वं पुमानसि त्वं कुमार उत वा कुमारी १०.८.२७

हे आत्मन्! तू जन्म-जन्म में स्त्री बनता है, पुरुष बनता है, कुमार बनता है, कुमारी बनता है।

अद् एकेन गच्छत्यद् एकेन गच्छतीहैकेन निषेवते ११.८.३३

कुछ कर्म ऐसे हैं जिनसे आत्मा मोक्ष में जाता है, कुछ कर्मों से पापयोनि में, कुछ से इस मनुष्यलोक में।

 

विविध

यश्चकार स निष्करत् स एव सुभिषक्तमः २.९.५

इलाज करे और रोग को निकाल दे, वही श्रेष्ठ चिकित्सक है।

यदन्तरं तद् बाह्यं यद् बाह्यं तदन्तरम् २.३०.४

जो तेरे अन्दर हो वही बाहर हो, जो बाहर हो वही अन्दर हो।

व्यापस्तृष्णयाऽसरन् ३.३१.३

पानी को प्यास नहीं लगती।

यश्चकार न शशाक कर्तुं शश्रे पादमङ्गुरिम् ४.१८.६

जो किसी काम को कर नहीं सकता, पर करने बैठ जाता है वह हाथ-पांव तोड़ बैठता है।

अयं लोकः प्रियतमः ५.३०.१७

आहा, यह संसार बड़ा ही प्यारा है।

आयं गौः पृश्निरक्रमीत् ६.३१.१

यह रंग-बिरंगा भूमण्डल चारों ओर घूम रहा है।

देवस्य सवितुः सवे कर्म कृण्वन्तु मानुषाः ६.२३.३

सब मनुष्यों को चाहिये कि प्रभु की आज्ञा में रह कर कर्म किया करें।

सा नो मेखले मतिमाधेहि मेधाम् ६.१३३.४

हे तगड़ी ! तू हमें मति दे, मेधा दे ।

सा त्वं परिष्वजस्व मां दीर्घायुत्वाय मेखले ६.१३३.५

हे तगड़ी ! मुझे दीर्घायु करने के लिये तू मेरी कमर में बँध ।

मुग्धा देवा उत शुनायजन्त-उत गोरङ्गैः पुरुधा-यजन्त ७.५.५

वे लोग मूर्ख हैं जो यज्ञ में कुत्ते की या गौ के अंगों की बलि देते हैं ।

सभा च मा समितिश्चावताम् ७.१२.१

सभा और समिति नाम की राज्यपरिषदें मुझ राजा की रक्षा करें ।

विद्म ते सभे नाम नरिष्टा नाम वा असि ७.१२.२

हे राजसभा ! हम तेरे स्वरूप को जानते हैं, तू अहिंसनीय है ।

सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु ७.५१.१

मित्र को मित्र की भलाई करनी चाहिये ।

पूर्णा पश्चादुत पूर्णा पुरस्तादुन्मध्यतः पौर्णमासी जिगाय ७.८०.१

देखो, यह पूर्णमासी आगे, पीछे, मध्य में सर्वत्र प्रकाशपूर्ण होकर विजयोल्लास से जगमगा रही है।

प्र पतेतः पापि लक्ष्मि ७.११५.१

हे पाप से अर्जित लक्ष्मी ! तू हमारे पास मत आ।

अद्या मुरीय यदि यातुधानो अस्मि ८.४.१५

आज ही मर जाऊं यदि मैं राक्षस होऊँ।

न विजानामि यदि वेदमस्मि ६.१०.१५

अहो, मैं यही नहीं जानता कि मैं क्या हूँ ?

अनागोहत्या वै भीमा १०.१.२६

बेकसूर की हत्या करना बड़ा भयंकर है।

मा नो गामश्वं पुरुषं वधीः

देख, हमारे गौ, घोड़े और पुरुषों को मत मार।

घनेन हन्मि वृश्चिकमहिं दण्डेनागतम् १०.४.६

विच्छू को घन से कुचल दूँगा, सांप आये तो लाठी से मार दूँगा।

सिन्धोर्मध्यं परेत्य व्यनिजमहेर्विषम् १०.४.१६

नदी में घुसकर सांप काटे का विष दूर कर देता हूँ।

अग्निर्विषमहेर्निरधात् १०.४.२६

अग्नि सांप काटे के विष को निकाल देता है।

देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति १०.८.३२

देखो, प्रभु के काव्य को देखो, न मरता है, न कभी पुराना होता है।

यावद् दाताभिमनस्येत तन्नातिवदेत् ११.३[१].२५

दाता प्रसन्नतापूर्वक जितना देना चाहे उससे अधिक न मांगे।

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः ११.५.३

आचार्य उपनयन संस्कार करके ब्रह्मचारी को अपने गर्भ में धारण करता है।

तं जातं द्रष्टुमभि संयन्ति देवाः

जब ब्रह्मचारी स्नातक बनता है तब देवता उसके दर्शन को आते हैं।

ब्रह्मचारी ब्रह्म भ्राजद् बिभर्ति ११.५.२४

ब्रह्मचारी देदीप्यमान ज्ञान को अपने अन्दर धारण किये होता है।

दिवमारुहत् तपसा तपस्वी १३.२.२५

तपस्वी अपनी तपस्या से ऊँचा उठ जाता है।

रुहो रुरोह रोहितः १३.३.२६

याद रखो, जो उन्नतिशील है वह एक दिन सबसे ऊँचा चढ़ जायेगा।

सलक्ष्मा यद् विषुरूपा भवाति १८.१.२

सगे सम्बन्ध वाली कन्या से विवाह करना बड़ा ही विषम होता है।

पाप माहुर्यः स्वसारं निगच्छात् १८.१.१४

उसे पापी कहते हैं जो बहिन से विवाह करे।

न यत् पुरा चकृमा कद्ध नूनम् १८.१.४

जो बुरा काम पहले हमने कभी नहीं किया आज उसे कैसे कर लेवें ?

इमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै १८.२.३८

वस्तुओं को हम ऐसी ईमानदारी से मापें–तोलें कि किसी को सन्देहवश दुबारा न मापना-तोलना पड़े।

अपश्यं युवतिं नीयमानां जीवां मृतेभ्यः परिणीयमानाम् १८.३.३

मैंने देख लिया है, युवति स्त्री विधवा हो जाये तो उसका पुनर्विवाह हो सकता है।

सुकर्माणः सुरुचः १८.३.२२

अच्छे कर्म करने वाले यशस्वी होते हैं।

हित्वावद्यं पुनरस्तमेहि १८.३.५८

पहले निन्दनीय कर्मों को छोड़, फिर घर में पैर रखना।

सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः १६.४२.३

यजमान की कामनायें पूर्ण हों।

पुरः कृणुध्वमायसीरधृष्टाः १६.५८.४

ऐसी लोह-नगरियाँ बनाओ जो अभेद्य हों।

हता इन्द्रस्य शत्रवः २०.१३७.१

जो वीर है उसके शत्रु अवश्य परास्त होते हैं।





लेखक की "वैदिक वीर-गर्जना" पर विद्वानों की सम्मतियाँ

स्व० महात्मा श्री नारायण स्वामी जी—संग्रह इतना उत्तम हुआ है कि मन्त्रों के पढ़ने से मनुष्य का हृदय वीरता के आवेश में आह्लादित हो उठता है। सभी मन्त्र सभी के, विशेषकर युवकों के याद रखने योग्य हैं।

पं० श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार, सम्पादक कल्याण—यह पुस्तक बड़ी ही सुन्दर है। हिन्दू जनता के लिये अत्यन्त उपयोगी है। प्रत्येक के संग्रह और मनन करने योग्य है।

डा० मंगलदेव जी शास्त्री, एम. ए., डी. फिल्.—पुस्तक पढ़ कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। आवश्यकता है कि इन उदात्त भावनाओं का हमारे जीवन में फिर से संचार हो। पुस्तक इस योग्य है कि उसका प्रचार घर घर में हो।

देशभक्त कुंवर चाँदकरण जी शारदा, अजमेर—हिन्दू जाति में वीरता के भाव फूंकने के लिये यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। प्रत्येक हिन्दू भाई का कर्तव्य है कि वह इस पुस्तक को स्वयं पढ़े और दूसरों को पढ़ावे।

पं० श्रीयुत हरिशंकर जी शर्मा—पढ़ते हुए हृदय में वीर रस की भावना हिलोरें मारने लगती है।......मन्त्रों के अर्थ सरल, सुबोध और ओजस्वी भाषा में किये गये हैं।

पं० श्रीपाद दामोदर जी सातवलेकर—यह पुस्तक बहुत ही अच्छी है। आप इसी तरह एक-एक विषय के मन्त्र इकट्ठे करके पुस्तक लिखेंगे तो आपका वैदिकधर्मियों पर बड़ा ही उपकार होगा।

श्रद्धानन्द-स्मारक-निधि

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी में इस कुल के पिता, अमरकीर्ति, स्वर्गीय श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की पुण्यस्मृति में एक 'श्रद्धानन्द-स्मारक-निधि' स्थापित हुई है। जो सज्जन चाहें वे इन श्रद्धेय स्वामी जी की स्मृति में इस कुल को प्रतिवर्ष दस या इससे अधिक रुपये देने का प्रतिज्ञापत्र भर कर इसके सभासद् बन सकते हैं। अभी तक ऐसे सभासदों का हमारा परिवार लगभग पांच सौ सज्जनों का बन चुका है। इन्हीं सज्जनों को प्रतिवर्ष गुरुकुलोत्सव पर भेंट करने के लिये यह 'स्वाध्यायमञ्जरी' गुरुकुल से प्रकाशित की जाती है।

